अजय कुमार उत्तम

मंत्र·तंत्र·यंत्र विज्ञान

ॐ

परम तत्वाय

नारायणाय

गुरुभ्यो नमः

मार्च-९१

सिद्धाश्रम साधक परिवार गुजरात द्वारा आयोजित

पद्म कुण्डीय महालक्ष्मी यज्ञ

और

ध्यान योग शिविर

(१२, १३, १४ अप्रैल १९९१)

शिविर स्थल : नारगोल वाया रेलवे स्टेशन संजान, जिला-बलसाड़, गुजरात

(बम्बई-अहमदाबाद मुख्य रेलवे लाइन पर संजान स्टेशन के निकट)

"सिद्धाश्रम साधक परिवार" का जो संगठन बन रहा है, वह केवल प्रान्त स्तर पर ही नहीं, जिला, तहसील स्तर पर भी इकाइयां गठित हो रही हैं, और नित्य प्रति विविध कार्यक्रम, चर्चा-पारचर्चा, यज्ञ आदि के सामूहिक कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव का हर शिष्य समर्पित है, कुछ ऐसा करने के लिए जो उसकी गुरु-भक्ति का साक्षात् प्रमाण बन जाय, **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** के ये कार्यक्रम–भक्ति, श्रद्धा, ध्यान, योग एवं चेतना की पंच क्रियाओं से अपने आपको जाग्रत कर, चेतना का उफनता हुआ ज्वार है, जो आनन्द रस से साधक को आत्मविभोर कर देता है।

और अब गुजरात में

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' गुजरात पिछले आठ वर्षों से सर्वाधिक सक्रिय है अपने कार्य के प्रति, और सर्वाधिक कार्यक्रम सम्पन्न भी इसी प्रदेश में हुए हैं, और नित्य प्रति लघु रूप से चलते रहते हैं चेतना के कार्यक्रम।

अब 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' गुजरात आमन्त्रित कर रहा है इस विशिष्ट महान 'पद्म कुण्डीय महालक्ष्मी यज्ञ' **और** 'ध्यान योग शिविर' **में।**

परम पूज्य गुरुदेव के चरण रज से पवित्र होगी गुजरात की धरती, और सम्पन्न होगा यह भव्य यज्ञ और शिविर।

'नारगोल', विराट सागर के तट पर प्राकृतिक सौन्दर्य के नैसर्गिक और पवित्र वातावरण से घिरा छोटा सा स्थान है, इसकी शान्ति को देखते हुए ही यहां यह भव्य आयोजन रखा गया है।

सागर की लहरों के किनारे, प्रकृति की पवित्र गोद में, इस यज्ञ – शिविर में वह सब कुछ संभव हो सकेगा, जो हमारी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है।

वर्ष-११

अंक-३

मार्च-१९९१

* * * * * * * * * * * *

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

जो शुद्ध हैं, चित्त हैं, पूर्ण हैं, परम हैं, तत्वमय हैं, सर्वोच्च हैं, सत् चित् आनन्द से परिपूर्ण हैं, ऐसे गुरुवर ज्ञान मार्ग के पथ प्रदर्शक, साधना की राह पर अग्रसर करने वाले नरों में श्रेष्ठ "नारायण" को मैं भक्तिभाव से प्रणाम करता हूं।

खिला खिला है यह गुलिस्तां
बिखरी है फिजां में भीनी भीनी खुशबू
मदहोश करती हैं ये बहारें

आओ ! मेरे अन्तर्मन की सुगन्ध से सुवासित बनों

गुरु सेवक—मेरे गुरुदेव ! यह साधक, यह शिष्य जो आपके पास आते हैं, वे स्वस्थ, सुन्दर, सम्पन्न होते हुए भी अपने चेहरे पर पीड़ा के ही भाव क्यों लिए रहते हैं ? क्या पीड़ा, और दुःख को पूर्ण रूप से मिटाया जा सकता है ? क्या सुख पूर्ण रूप से अनुभव किया जा सकता है ?

तुम्हारा यह प्रश्न शिष्यों की व्यथा के मर्म स्थल की बात को स्पष्ट रूप से कह रहा है, मैं भी इसी चिन्तन में रहता हूं कि क्या पीड़ा का सही अर्थ इनको मालूम है ? सुख का या दुःख का विभेद ये कर सकते हैं, क्या ये अपने भीतर के प्रवाह को मोड़ सकते हैं ?

तुम्हें पांच इन्द्रियां मिली ही हैं, देख सकते हो, सुन सकते हो, स्पर्श सुख प्राप्त कर सकते हो, गन्ध का अनुभव कर सकते हो, किसी स्वाद को परख सकते हो, इस क्रिया को कितना जानते हो, और यदि मैं कहूं कि इनमें से किसी एक भी गुण में इन लोगों की इन्द्रिय पूर्णता नहीं है, तो बात पूर्ण रूप से सही है ।

इनके लिए स्पर्श-सुख, गन्ध-सुख, स्वाद-सुख, श्रवण-सुख और दृश्य-सुख कुछ अलग ही है, निरर्थक ही है, और यही इनकी पीड़ा का मूल कारण है, इस सन्दर्भ में एक छोटी सी कथा बताता हूं—एक बार सुन्दरता और असुन्दरता दोनों एक नदी पर स्नान करने पहुँचीं, अपने-अपने वस्त्र उतार कर नहाने में मग्न हो गईं, असुन्दरता जल्दी-जल्दी स्नान कर बाहर निकली और चुपचाप सुन्दरता के वस्त्र पहिन कर चली गई, थोड़ी देर बाद सुन्दरता स्नान कर जब बाहर निकली तो उसने देखा, उसके वस्त्र ही नहीं हैं, अब क्या करें, कोई उपाय भी नहीं, कितनी देर नग्न खड़ी रहे, देखा तो सामने असुन्दरता के वस्त्र पड़े थे, बेचारी क्या करती, उसने वही वस्त्र पहिने, और चल पड़ी ।

देखा तुमने, वह दिन है और आज का दिन है, दुनियां जिसे सुन्दरता समझ रही है, वास्तव में वह असुन्दरता है, और दुनियां जिसे असुन्दरता समझ रही है, वह वास्तव में सुन्दरता है। दोष दुनियां का नहीं, क्योंकि वह तो इन आंखों से बाहरी आवरण को ही देखती है, और इस बाहरी आवरण ने हमेशा धोखा ही दिया है ।

क्योंकि ये शिष्य अपने मन से सुन्दरता, प्रसन्नता और सुख को नहीं देखते, इन बाहरी इन्द्रियों से जो देखते हो, उसे मन की इन्द्रियों से भी देखो, यदि मन कहता है, यह सुन्दर है, यही उपयुक्त है, तो उसे अवश्य करो

लेकिन भीतर सुख का स्थान बनाओ जब तक भीतर स्थान नहीं होगा, सुख भरोगे कैसे, वहां खाली स्थान बनाओ और हो सके तो शून्य उत्पन्न कर दो, फिर देखोगे कि सुख आ रहा हैं, और वह अनुभव मदमस्त कर देने वाला होगा।

अभी कुछ दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा कि महाराष्ट्र का एक अत्यन्त गरीब विद्यार्थी जो एक झोपड़-पट्टी में अपने परिवार के आठ सदस्यों के साथ एक दस फुट के कमरे में रहता था, पूरे महाराष्ट्र में हाई स्कूल परीक्षा में ९६ प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, उसी कमरे में उसके मां-बाप चार भाई बहिन सब रहते थे, सब अपना काम करते थे, मेहमान भी आते थे, सब कार्य चलते रहते थे, और बालक पढ़ता था, ऐसा नहीं था कि वहां एकदम साइलेन्स था कि जिससे वह बालक एकाग्र हो सके और उसे कोई डिस्टर्ब न करें, तो फिर उसने ऐसी सफलता कैसे प्राप्त कर ली।

अरे, उसने अपने बाहर का शोर सुनना बन्द कर दिया, वह भूल गया कि शोर हो रहा है, उसने अपने आपको एकाग्र कर लिया, अपने बाहर की श्रवणेन्द्रिय को बन्द कर भीतर की श्रवणेन्द्रिय ही जाग्रत रखी, इससे वह जो पढ़े वह ही उसके मस्तिष्क में जाय, बाहर का शोर उसके मस्तिष्क में न जाय।

तुम लोग भी यही करो, बाहर का शोर, कोलाहल मत सुनो उसे रोक दो, तो भीतर जो शान्ति है वह तुम्हें प्रसन्नता देगी, तुम जो साधना करोगे उसमें सफलता अवश्य मिलेगी, साधना करते समय यदि तुमने यह ध्यान रखा कि कौन आ रहा है, कौन जा रहा है, ऑफिस का समय हो रहा है, बच्चे झगड़ रहे हैं, तो फिर साधना में सफलता कैसे मिलेगी, कैसे अनुभव करोगे वह सुख जो तुम्हारे भीतर है।

शिष्य साधक यहां आते हैं, किस लिए ? मैं जानता हूं कि वे कुछ पाने के लिए, अपने आपको पूर्ण बनाने के लिए अपने दुःखों को दूर करने के लिए, पूर्णता प्राप्त करने के लिए आते हैं।

यहां सुगन्ध है, शान्ति है, सुख है, दुःखों को भूलने का माध्यम है, लेकिन उसके लिए एकाग्र होना पड़ेगा, उस मन को ऐसा निश्छल निर्द्वन्द्व बना देना पड़ेगा कि वह गन्ध पूर्ण रूप से ग्रहण कर सके. और हर श्वास में वह खुशबू ही अनुभव होती रहे, उसके लिए क्या छोड़ना है, उसके लिए अपने आपको खुला छोड़ देना है, अपने आपको भुला देना है, इन बाह्य इन्द्रियों के भरोसे तुम बहुत दिन रह लिए, अब कुछ समय भीतर की इन्द्रियों के भरोसे रह कर देखो तो सही।

जब अपने आपमें रहना सीख जाओगे तो सुख का प्रारम्भ हो जायेगा, मत दबा कर रखो मन की इन्द्रियों को, इसको यहां मेरे पास प्रस्फुटित होना ही है और यह हो कर ही रहेगी, तुम लोगों ने कभी बांस के खेत देखे हैं? जब बांस का बीज भीतर ही भीतर अंकुरित हो कर फूटता है तो एक फटाक की आवाज होती है और वह सीधा करीब एक फुट बाहर निकल जाता है, यह कैसा चमत्कार ? कल तक तो जमीन सपाट थी और आज सीधा एक आवाज के साथ बांस इतना बाहर निकल गया।

मैं वही आवाज तुम्हारे भीतर उत्पन्न कर उस सुख-वृक्ष को सीधा बाहर निकालना चाहता हूं, तुम उस पर बड़े-बड़े पत्थर मत रखो, इतनी वर्जनाएं अपने साथ मत बांधो, अपने आपको भीतर से खोल दो, तो सब कुछ सही होगा, जो कि तुम्हारे स्वयं के लिए आवश्यक है।

विज्ञान का युग है, तर्क का युग है, हर बात को देखने परखने का युग है, वैज्ञानिकों ने मुर्गियों के लिए कुछ विशेष प्रकार का दाना बनाया, जिससे अण्डे बिना सम्भोग के उत्पन्न होने लगे, लेकिन उस अण्डे से चूजा अर्थात् मुर्गी का बच्चा नहीं बन पा रहा था, उसमें जीव नहीं पड़ रहा था, फिर उन्होंने दिमाग लगाया, मुर्गा मुर्गी के सम्भोग से जो अण्डा उत्पन्न हुआ उसका अध्ययन किया, उन्होंने देखा कि मुर्गी अपने ताप से अण्डे को २१ दिन तक सेंकती है और फिर अण्डा फूटने पर चूजा बाहर निकलता है, इसी प्रकार उन वैज्ञानिकों ने भी उस अण्डे को लेकर एक ऐसे कमरे में रखा जिसमें वही वातावरण था वैसा ही तापमान रखा, जितना तापमान अण्डा अपनी मां के नीचे प्राप्त करता है, पूरे २१ दिन भी रखा लेकिन कुछ हुआ ही नहीं, अण्डा तो अण्डा ही रहा, क्यों भाई! सब कुछ तो वैसा ही कर दिया, इसमें रहस्य क्या है ? यह रहस्य सुलझने वाला ही नहीं था, और न सुलझा पाये, साधक भी कहता है, कि मैं ज्ञान की इतनी पुस्तकें पढ़ता हूँ, इतने जोर शोर से मंत्र बोलता हूं, जैसे पुस्तक में लिखा है, झूठा नहीं हो सकता, फिर सिद्धि क्यों नहीं प्राप्त होती ?

जब तक गुरु तुम्हारा सेचन नहीं करेगा, जब तक तुम्हारा गुरु तुम्हें अपनी ऊष्मा नहीं देगा तब तक तुम सिद्धि कैसे प्राप्त कर सकोगे, गुरु तुम्हें अण्डे की भांति अपनी ऊष्मा दे कर तुम्हारा विकास कर सकेगा और तुम देख सकोगे, बाहर सही रूप में तुम अपना कवच, अपना आवरण जो कि कठोर है, तोड़ सकोगे, और यह आवरण तुम्हें तोड़ना ही है, इस पीड़ा को मिटना ही है, ।

पीड़ा को बाहर निकलने का रास्ता दो

मैं तुम्हें कहता हूं कि इस पीड़ा को बाहर की ओर प्रवाहित कर दो, इसे दबाओ मत, यदि आंसुओं के माध्यम से निकलती है तो इसे निकलने दो, इस पीड़ा को अपने भीतर से खाली कर दो, यदि तुम मेरे पास आकर भी इस पीड़ा को खाली नहीं कर सकते तो कहीं भी खाली नहीं कर पाओगे, पीड़ा को हटाओगे तो आनन्द के बीज विकसित होंगे, जहर भरे खेत में केसर के सुगन्धित पुष्प नहीं खिल सकते, इसके लिए तो ठंडक चाहिए, इसके लिए विशेष प्रकार की मिट्टी चाहिए, स्वस्थ बीज चाहिए, यह सब खिल सकता है, और खिलेगा तुम्हारे भीतर ही, क्योंकि सबसे आवश्यक बात प्रक्रिया प्रारम्भ करने की थी, और यह प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है।

इसके लिए न तो उम्र की बाधा है, और न ही कोई अर्घ्य, आनन्द ग्रहण करने के लिए, सुगन्ध प्राप्त करने के लिए कोई भी समय निर्धारित नहीं है, जिस क्षण तुम्हें अनुभव होने लगे, जिस क्षण प्रसन्नता का आगमन हो वही तुम्हारे नवीन जन्म का प्रारम्भ है।

बिखरती हुई खुशबू को अपने भीतर समेट लो, जब भीतर समेटने लगोगे तो यह खुशबू मस्तिष्क में ही तो चढ़ेगी, क्योंकि खुशबू तो ऊपर की ओर ही जाती है, और यह खुशबू खोलेगी वे सभी बन्द कपाट, दूर करेगी वह सभी दुर्गन्ध, पीड़ा जो बहुत दिनों से चली आ रही है तुम लोगों के साथ, अनुभव होगा वह स्वाद, जो जिह्वा ने अनुभव ही नहीं किया होगा, शान्त होगा भीतर का शोर, और जब शोर शान्त होगा, तो उठेगा जोश।

आओ, मैं तुम्हें अपने प्यार के रंग में अपनी ऊष्मा के संग अपना रहा हूं तुम जैसे भी हो, मेरे अपने हो। ★

निखिलेश्वरानन्द–महोत्सव

(१९, २०, २१ अप्रैल १९९१)

पूरे वर्ष का सौभाग्य महोत्सव, निखिलेश्वरानन्द-महोत्सव, गुरुदेव का आनन्द-मय जन्म-महोत्सव ।

फिर वसन्त ने पतझड़ को आवाज दी है, फिर वर्षा की नन्ही-नन्ही बूंदों ने पाती लिख कर भेजी है, फिर प्राणों ने जीवन की मधुर राग छेड़ी है, फिर सागर ने अपनी दोनों बांहें फैला कर नदियों को अपने आगोश में ले लेने का आमन्त्रण दिया है ।

और फिर वर्ष का यह सर्वश्रेष्ठ जन्म दिवस महोत्सव, फिर गुरु और शिष्य का आत्मीय मिलन, फिर साधना की ऊंचाइयों को स्पर्श करने का महोत्सव, फिर बूंद का समुद्र में पूरी तरह से विलीन हो जाने का आनन्द उत्सव ।

दुःखों से दग्ध जीवन के रास्ते पर आनन्ददायक मधुर फुहार, जीवन की समस्याओं को सुलझाने का अद्वितीय अवसर, पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस महोत्सव ।

और पूरा भारतवर्ष प्रयत्नशील है, गुरु-तीर्थ जोधपुर में इस अवसर पर आने को, मिलने को, नृत्य, संगीत, भजन, मस्ती, आनन्द और छलकते हुए अमृत कलश का रसास्वादन करना को ।

पूज्य गुरुदेव का अद्वितीय जन्म दिवस महोत्सव ।

जीवन की अलमस्त फुहारों में

निखिलेश्वरानन्द जन्म महोत्सव वर्ष का एक ऐसा अवसर है, जब समय चलते चलते रुक जाता है, कुदरत एक नया करिश्मा खिला देती है, वसन्त नजाकत से और मधुरता से पर्दे के पीछे छिप कर मुस्कराने लगता है, और आकाश में छोटी छोटी बदलियां रिमझिम फुहारों से आने वाले शिष्य शिष्याओं के तन-मन को भिगो देती हैं।

भिगो देती हैं तन को, तन के अन्तर्तन को और इससे भी ज्यादा रसप्लावित कर देती हैं मन को, और मन जलती दोपहरी में भी, दुःखों की धूप में भी, एक शान्ति, एक ठंडापन एक आनन्द अनुभव करता है, ऐसा लगता है कि जैसे यह जोधपुर नहीं है, यह तो गुरु-तीर्थ है, यह कोई स्थान नहीं है, आनन्द और सौंदर्य के किनारे मदमस्तों का जमघट है, जहां प्रकृति अपना सब कुछ लुटाने के लिए आतुर होती है, और आने वाले साधक-साधिकाएं, शिष्य-शिष्याएं लूटने के लिए बेताब होते हैं।

और फिर रात तो एक अजीब सी खुमारी ले कर यहां उतरती है, यहां पर समय, समय नहीं रहता, यहां पर काल का कोई हुक्म नहीं चलता, यहां पर तो मन का सरगम छिड़ता है, यहां पर तो तन की वीणा बना कर धुन निकाली जाती है, और इस महोत्सव में कुछ ऐसा रंग बिखरता है, कि सारा जीवन रंगमय बन जाता है, कुछ ऐसी हलचल होती है, कि मन के सारे तार खुद ब खुद बजने लग जाते हैं।

राजहंस उड़ि जाहि गगन में

क्योंकि यहां पर जितने भी शिष्य आते हैं, वे उस अमृत महोत्सव में भाग लेने के लिए आते हैं, जो अनूठा है, आनन्द का मानसरोवर है, जिसमें हंसों की तरह क्रीड़ा करने को मन मचल उठता है, और सभी साधक-साधिकाएं उस अदृश्य स्नेह सूत्र में बंधे होते हैं, कि सब एक हो जाते हैं, सब पर गुरुदेव का नशा चढ़ जाता है, सब जीवन रस में छक कर तृप्त हो उठते हैं, और बरसता है गीतों का रंग, बरसता ही चला जाता है, नृत्य की छम छणण छम के साथ, और यह नृत्य यह सौन्दर्य यह संगीत रात को शानदार और नशीली बना देता है, इच्छा ही नहीं होती कि पण्डाल से उठें, विचार ही नहीं आता कि क्या हो रहा है, क्योंकि इस फुहार में तो प्रत्येक साधक फूल की तरह खिल जाता है, और झर जाती हैं पंखुड़ियां, प्रत्येक पंखुरी रस से सराबोर, मधुरता से ओत-प्रोत।

और फिर माइक पर गूंज उठती है, पूज्य गुरुदेव की वाणी, ऐसा लगता है, कि जैसे हरसिंगार की पंखुरियां झड़ गई हों, ऐसा लगता है, कि जैसे आकाश से फुहार पूरे शरीर को और शरीर से भी ज्यादा मन को, आत्मा को भिगो रही हो, और फिर बूंद की यात्रा प्रारम्भ होती है, समुद्र की ओर बढ़ने की, और फिर किरणों का वर्तुल बनता है, सूर्य की ओर बढ़ने का, और उनकी वाणी खुमार भर देती है, प्राणों में, शरीर में, आत्मा में और जिन्दगी के पोर-पोर में।

बूंद समानी समद में

और यह मिलन सामान्य मिलन नहीं है, यह तो कई-कई जन्मों का मिलन है, कई-कई जन्मों से आवाज दी है गुरुदेव ने, और हर जिन्दगी को पकड़ने की चेष्टा की है, क्योंकि वे तो फूल से भी नाजुक और नवनीत से भी ज्यादा कोमल हैं, उनकी वाणी का तो एक ही उद्देश्य है, कि यह सुगन्ध वसन्त में पूरी तरह से मिल जाय, यह बूंद समुद्र में पूरी तरह से लीन हो जाय, यह बार-बार जन्म लेने की क्रिया एक बारगी ही समाप्त हो जाय।

और शिष्यों के ललाट की दुर्भाग्यशाली लिपि को बदलने की क्रिया करते हैं गुरुदेव, मन के मैल को समाप्त करने की कोशिश करते हैं गुरुदेव, और वे इस महोत्सव

में भी कुण्डलिनी जागरण के साथ-साथ पहली बार शरीर स्थित अमृत कुण्ड पर से पर्दा हटाने का प्रयास करेंगे, जिससे कि वह अमृत साधक के पूरे शरीर में फैल सके, वह अमृत वह कर रक्त में मिल सके, वह अमृत जो जिन्दगी को पूर्णता की ओर पहुंचा सके ।

जीवन की मुरलिया

इस "निखिलेश्वरानन्द महोत्सव" को केवल शिविर की संज्ञा देना उचित नहीं है, यह तो पूर्णिमा की चांदनी है, जो मन के अंधियारे को दूर करने में समर्थ है, यह महोत्सव छलकते हुए जाम की तरह है, जिसे पीने पर पूरे बदन में पुलक भर उठती है, हृदय मोहित हो उठता है, नैनों में सौ-सौ स्वप्न तैरने लग जाते हैं, और चारों तरफ बासन्ती धूप खिल उठती है, यह महोत्सव जीवन की मुरलिया है जो बजने पर पूरा शरीर झनझना उठता है, जिसकी आवाज से पूरा आलम नशीला हो उठता है, भक्ति रस चारों तरफ से इस प्रकार से बरसने लगता है कि उसे अभिव्यक्त करने के लिए कोई शब्द नहीं बनते, कविताओं का ऐसा दौर चलता है, कि जिसे अर्थ देने की कोई स्थिति नहीं बनती, यह तो एक ऐसी चेतना की धारा बन कर चारों तरफ गुंजरित होती है कि कोई **'राधा'** बन कर नृत्य करने लगती है, कोई **'ललिता'** आंखें बन्द कर थिरकने लग जाती है, और कोई **'मीरा'** तानपुरे के साथ छलकने लग जाती है, ऐसा लगता है कि जैसे दिव्य संगीत जन्म ले रहा हो, ऐसा लगता है कि सीने में घिरा हुआ बोझ हलका होने लगा है, ऐसा लगता है कि जैसे पत्तों में नये-नये अंकुर फूटने लगे हों, और फिर— **"पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे"** **"रंग दे चुनरिया श्याम मोरी"** या फिर **"गुरु बिन कौन बताये बात"** जैसी स्वर लहरी जीवन को एक आनन्द, एक पुलक, एक मस्ती और एक अमृत देने लग जाती है ।

घुंघरुन छनक रहे

यह **'निखिलेश्वरानन्द-महोत्सव'** साधना और संगीत का अद्भुत समन्वय बन जाता है, हास्य, विनोद, खिलखिलाहट, मुस्कराहट, नशीलापन और घुंघरुओं की झंकार के बीच गुरुदेव के सतर्क नेत्र बराबर प्रत्येक शिष्य पर जमे रहते हैं, उनकी मुस्कराहट से निसृत अमृत बिखरता रहता है और उनकी उपस्थिति से निरन्तर ऊर्जा का सृजन शिष्य के अन्दर होता रहता है, एक ऐसी 'ऊर्जा' जो जीवन को जीवन को ऊंचाई पर ले जाने समर्थ है, एक ऐसी ऊर्जा जिससे सत्य का साक्षात्कार किया जा सकता है, एक ऐसी ऊर्जा जो अनूठी है, अद्वितीय है, और जो कुण्डलिनी जागरण के साथ-साथ पूर्णता देने में समर्थ है, यह एक ऐसी ऊर्जा प्रतीत होती है जैसे ज्ञान का सारा सार एकत्र हो गया हो, जिससे जीवन अपने आप में पूर्ण बन जाता है, मौन हो जाता है, गुरु के पास एक ऐसा अमृत कुण्ड है, कि पास बैठने से ही अपने आप डुबकी लग जाती है, अपने आप तन-मन पवित्र हो उठता है, यही तो गंगा स्नान है, यही तो अमृत रस से सिक्त स्नान है ।

अब शुभ मुहूर्त आ गया है कि शिष्य और गुरु के बीच की दूरी समाप्त हो जाय, ये दिन ऐसे ही मुहूर्त की घड़ियां हैं क्योंकि जब गुरुदेव की उपस्थिति होगी तो बूंद स्वतः नाचेगी ही, जब बसन्ती हवा बहेगी तो फूल खिलेगा ही, उसकी पंखुड़ियां मदमस्त होंगी ही, उसके पराग कण चारों तरफ बिखरेंगे ही, और गुरु के शब्दों से अन्दर की आत्मा जागेगी ही, क्योंकि जागने पर ही साधक को अनूठे क्षण प्राप्त होते हैं, क्योंकि गुरुदेव की उपस्थिति से ही शरीर थिरकने लगता है, गुनगुनाने लगता है, बहुत कुछ घटित होने लगता है, हजारों-हजारों वर्षों की मन की ग्रन्थियां टूटने लगती लगती हैं, और जो कुछ बनता है उसे संभालना कठिन हो जाता है, जो कुछ बहता है उससे शिष्य तो तृप्त होता ही है, आस पास के लोग भी संतुष्टि अनुभव करने लगते हैं ।

यहां जीवित जाग्रत मन्दिर है

गुरुदेव की उपस्थिति जीवित मन्दिर की परिक्रमा है, गुरुदेव की उपस्थिति आनन्द प्राप्त करने की मधुशाला है, जहां पीने पर एक अहसास होता है, ऐसा लगता है कि जैसे यदि यहां नहीं पहुंचे, तो

पूरा जीवन बरबाद हो गया, ऐसा लगता है कि जैसे यदि एक मिनट की भी चूक हो गयी तो पूरा वर्ष हाथ से चुक जायेगा, पूरा जीवन बेमानी बन कर रह जायेगा।

मैं तुम्हारे जीवन का रखवाला हूं

और फिर इस महोत्सव में गुरुदेव एक नयी क्रिया एक नया चिन्तन एक नया भाव देते हैं, वे कहते हैं अपने से भागने की जरूरत नहीं है, तुम्हें मेरे पीछे खड़ा हो जाना है, तुम्हें केवल मेरी उपस्थिति का अहसास करना है, तुम जो कुछ पूरी दुनियां में खोज रहे हो वह वहां कहीं पर भी नहीं है, वह तो मेरे पास है, तुम बुद्धि के रेगिस्तान में व्यर्थ में ही भटक रहे हो, क्योंकि तुम्हारे जीवन को कोई तृप्ति दे ही नहीं सकता, तुम्हारे जीवन का मैं ही रखवाला हूं, कई-कई जन्मों से इस जीवन का तुम्हारे जीवन का साक्षी रहा हूं, पर इस बार मैं तुम्हारे इस पात्र को उघाड़ देना चाहता हूं, इस बार तुम्हारे अन्दर स्थित अमृत कुण्ड को जगा देना चाहता हूं, इस बार तुम्हें मानसरोवर में तैरने की क्रिया सिखा देता हूं, इस बार तुम्हें समझा देता हूं कि जीवन का मर्म, जीवन का अर्थ क्या है, और इस बार तुम्हारे पंखों में वह ताकत भर देना चाहता हूं जिससे कि तुम राजहंस बन कर मुक्त आकाश में विचरण कर सको, तुम पवित्र बन कर जीवन का आनन्द ले सको, तुम अपने जीवन को पूर्णता दे सको, जो कुछ खो गया है, उसे प्राप्त कर सको, और यह सब पोथियों में, माला के मनकों में नहीं मिलेगा, यह मन्दिर की परिक्रमा करने में और गंगा में कूदने से भी नहीं मिलेगा, यह सब कुछ तो मेरे पास है, और इसके लिए तुम्हें मेरे पास आना ही होगा।

ऐसा न हो कि

ऐसा न हो कि तुम विलम्ब कर दो और जिन्दगी समाप्त हो जाय, ऐसा न हो जाय कि तुम विलम्ब कर दो और गुलाब की पंखुरी झड़ जांय, ऐसा न हो कि तुम रुक जाओ और दिया जले ही नहीं, और यदि ऐसा हो गया तो पिछले कई जन्मों की तरह फिर तुम्हारा यह जन्म भी अकारण चला जायेगा, फिर यह जिन्दगी जंजीरों में बंद कैद बन कर रह जायेगी, फिर इन आंखों में कोई स्वप्न नहीं होगा, फिर इन पांवों में कोई थिरकन नहीं होगी, फिर तुम्हारे जीवन में किसी प्रकार की कोई शंख ध्वनि नहीं होगी, फिर तुम्हारा रोम-रोम पिघल नहीं सकेगा, फिर तुम्हारे स्वर में मधुरता का गुंजरण नहीं हो सकेगा, फिर तुम्हारी देह संगीत और नृत्य का महोत्सव नहीं बन सकेगी।

इसीलिए तो ये दिन उत्सव के नहीं, अपितु महोत्सव के दिन हैं, त्यौहार के दिन हैं, आनन्द और उमंग के दिन हैं, गुरू और शिष्य के मिलन की क्रिया-प्रतिक्रिया हैं, जीवन को पूर्णता देने का महोत्सव है।

लिख भेजी इह पाती

और इसीलिए इन तीन दिनों ने आवाज दी है, इसी लिए इन पंक्तियों के माध्यम से निमन्त्रण पत्र भेजा जा रहा है, इसीलिए इस महोत्सव में प्राणों की झंकार के साथ एक रागिनी छेड़ी है, इसीलिए इस महोत्सव में गुलाब की कलियां विकसित हुई हैं और झूम-झूम कर निमन्त्रण दे रही हैं, मस्ती में डूबने के लिए, आनन्द में सराबोर होने के लिए, जीवन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए, मन की गांठे खोलने के लिए और दग्ध हृदयों पर अमृत की फुहार करने के लिए।

और यह महोत्सव हौले से आवाज दे रहा है साधना की पूर्णता प्राप्त करने के लिए, यह महोत्सव सरगम छेड़ रहा है सिद्धियों के हाथों वरमाला पहिनने के लिए, क्योंकि गुरुदेव की उपस्थिति और उनकी साक्षी ही सिद्धि है, सफलता है, पूर्णता है।

और मदमस्तों की टोलियां इस महोत्सव में भाग लेने के लिए भारत के कोने-कोने से निकल पड़ी हैं, "निखिलेश्वरानन्द महोत्सव" में सम्मिलित होने के लिए, और हम बांहें फैलाए खड़े हैं सबको अपने सीने से लगाने के लिए, मस्ती के रंग में सराबोर करने के लिए। ●

नीलकंठ गुरुदेव

जो समाज के जहर को अपने हलक (गले) में

उतारे हुए गतिशील हैं

गुरु के सम्पूर्ण स्वरूप को जानने, पहिचानने की प्रक्रिया और उसे अपने भीतर आत्मसात् कर लेने की क्रिया ही साधना है, जब तक शिष्य अपने गुरु-तत्व को पूर्ण रूप से नहीं पा लेता, तब तक वह अधूरा है, उसके दुःख, उसकी पीड़ा, उसकी शक्ति उसे धीरे-धीरे क्षय करती हैं, गलाती हैं, तिल-तिल करके मारती हैं।

साधक, शिष्य शक्ति सम्पन्न भी हो सकता है, शिष्य की प्रारम्भिक अवस्था में, अपने विकास की प्राथमिक भूमिका में वह एक विशेष शक्ति के वश में होता है, इस शक्ति की कोई निश्चित दिशा नहीं होती, यह शक्ति सहस्र धाराओं में बंट कर उसका विनाश कर सकती है।

गुरु के संसर्ग में उसकी इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति का क्रमिक विकास होता है, उसकी बुद्धि जाग्रत होती है, शिष्य का वास्तविक अहं अर्थात् वास्तविक रूप से शिष्य क्या है, और उसके भीतर कितनी शक्ति है, यह भाव ही अहं भाव है, इसे गुरु ही जाग्रत करता है।

गुरु को तो यह जहर पीना ही पड़ेगा

यह विकास की प्रक्रिया बहुत द्वन्द्वात्मक है, इसमें बहुत पीड़ा होती है, यह पीड़ा जहर समान ही रहती है और जब तक पीड़ा का यह जहर शान्त नहीं हो जाता तब तक वह अपने अहं भाव को, अपने शक्ति भाव को पूर्ण जाग्रत नहीं कर सकता, अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता, गुरु ही इस पीड़ा में शिष्य को पूर्ण रूप से स्वीकार कर उसकी पीड़ाओं को झेल कर धारण करता है, इसीलिए गुरु अपने शिष्य के जहर को अपने भीतर उतारने वाला नीलकंठ है।

गुरु, एक शिष्य के ही जहर को, एक शिष्य की पीड़ाओं, कष्टों को नहीं धारण करता, उसे तो हजारों-हजारों शिष्यों की पीड़ाओं, कष्टों, दुःखों के जहर को धारण करना पड़ता है, जिससे वे जीवन के आनन्द का अमृतपान कर सकें, जब तक जहर और अमृत साथ-साथ हैं, तब तक अमृत,

अमृत नहीं रह सकता, जब अमृत जहर के साथ मिल जाता है तो वह भी जहर बन जाता है।

इसी प्रकार शक्ति भी विष स्वरूप शक्ति शिष्य को विनाश की ओर ले जाती है तथा अमृत स्वरूप शक्ति शिष्य को पूर्णत्व की ओर ले जाती है, गुरु, शिष्य के इस अमृत और विष को अलग-अलग कर विष अपने अन्दर पचाता है, जिससे शिष्य के लिए अमृत पान अर्थात् शक्ति का आनन्द स्वरूप मार्ग सरल हो जाय, यह क्षमता केवल गुरु में ही है जो अपने शिष्यों के जहर स्वरूप दुःख, पीड़ा को अपने पंचम चक्र में धारण कर लेता है, और शिष्य को गतिशील बनाये रखता है।

शिष्य कहता है—मैं पापी हूं, दुष्कर्मी हूं, निष्कर्ण अर्थात् किसी की बात को नहीं सुनता, कुमार्गगामी हूं, असत्य वादी हूं, तो क्या हे गुरुदेव ! आप मुझे त्याग देंगे, आप तो नीलकंठ शिव समान हैं, सेवा से प्रसन्न होकर पूरे विश्व का कष्ट अर्थात् जहर अपने कंठ में धारण किये हुए हैं, तो क्या मुझे आप अपने पैरों तले पड़ा नहीं रहने देंगे, मुझे कंठ नहीं चाहिए, आपके तलवे के तले पड़े रहने में ही अपने आपको कृतार्थ समझूंगा।

साधक तथा शिष्य विकारों को, दोषों को अपने साथ ही लेकर आता है, उसमें एक नहीं अनेक दोष होंगे, उसके सोचने का दायरा सीमित होगा, वह कुछ करना तो चाहता है लेकिन उसे मार्ग नहीं मिलता, उसके विकार, उसकी पीड़ाएं बन कर फूटते हैं, ये पीड़ाएं कभी रोग के रूप में कभी शोक के रूप में, कभी शत्रु के रूप में प्रकट होती हैं।

यदि शिष्य स्वयं इन पीड़ाओं को दूर कर सकता, तो वह गुरु के पास जाता ही क्यों ? गुरु तो शिष्य के इन विकारों को दूर करने वाला वह डाक्टर है, जिसे शिष्य की इन पीड़ाओं को स्रोत बिन्दु से मिटाना पड़ता है, चुभा हुआ कांटा तो हर कोई निकाल सकता है लेकिन मन की पीड़ाओं को तो गुरु ही शान्त कर सकते हैं।

गुरु की मुद्रा हर समय प्रसन्न एवं अलमस्त रहती है, इतनी अधिक चिन्ताओं का भार वहन करने के पश्चात् भी चेहरे पर शिकन नहीं आती क्योंकि गुरु को मालूम है कि शिष्य के पास गुरु के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है, और यह दोष यह पीड़ा तो उसे ग्रहण करनी ही पड़ेगी, लेकिन शिष्य अल्प बुद्धि का व्यक्ति होता है, वह अपने आप को बहुत चतुर चालाक समझता है, उसमें मिथ्या अभिमान बहुत भरा रहता है, और यदि उसे सांसारिक दृष्टि से थोड़ी बहुत सफलता मिली हुई होती है तो वह अपने आपको अत्यन्त उच्च समझने लग जाता है, वह समझता है कि गुरु से भी चतुरता से, छल से कुछ प्राप्त कर ही लेगा लेकिन क्या यह संभव है ?

गुरु के समक्ष तो शिष्य का एक ही गुण महत्वपूर्ण है-निष्ठा और समर्पण, गुरु केवल अपनी दृष्टि से इन्हीं दो गुणों के आधार पर ही अपने निकट, शिष्य को स्थान देता है और उसकी पीड़ाओं पर ऐसा मरहम लगा देता है कि शिष्य का जीवन ही परिवर्तित हो जाता है।

गुरु के भीतर झांको

साधारण शिष्य बड़ा ही स्वार्थी प्राणी कहा जा सकता है, उसके सामने अपना ही माया संसार, अपनी ही चिन्ताएं होती हैं, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके पास एक मार्ग है, कि वह अपने गुरु को इन पीड़ाओं का भार सौंप दे, लेकिन क्या गुरु के हृदय के भीतर झांकने की कल्पना या प्रयास भी किया है ? किस-किस का जहर, किस-किस की पीड़ा गुरु को झेलनी पड़ती है, यदि कोई वार होगा, तो उसे झेलना ही पड़ेगा, यह वार शिष्य के ऊपर होगा तो भी उसे भी झेलेंगे तो गुरु ही, और इन सब के उपरान्त गुरु के चेहरे पर मुस्कराहट, प्रसन्नता और शिष्य के लिए अभय मुद्रा।

इन सब स्थितियों में भी गुरु अपने शिष्यों का कभी त्याग नहीं करता, वह कहता है—"तुम जैसे भी हो आ जाओ क्योंकि तुमने मुझ से दीक्षा ली है, इसलिए तुम्हें स्वीकार तो करना ही है"।

रुद्रयामल तंत्र में लिखा है—

यस्मान्महेश्वरः साक्षात् कृत्वा मानुषविग्रहम् ।
कृपया गुरु रूपेण मग्नाः प्रोद्धरति प्रजाः ।।

अर्थात् एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का कल्याण नहीं कर सकता, स्वयं महेश्वर ही मनुष्य मूर्ति रूप धारण कर कृपा पूर्वक गुरु रूप से माया संसार के जीवों का उद्धार करते हैं।

इसीलिए शिष्य के लिए आवश्यक है कि वह उन पीड़ाओं को समझे, गुरु के इस महान स्वरूप को समझते हुए इनके प्रति अनुग्रह प्रगट करे, गुरु कृपा का फल धीरे-धीरे अवश्य ही मिलता है क्योंकि गुरु का कार्य तो देना ही होता है और शिष्य को शिष्यत्व की प्राप्ति करानी है, जब तक शिष्य, गुरु की पीड़ा को समझने का प्रयास ही नहीं करेगा तब तक वह स्वार्थी तथा कृतघ्न ही है, गुरु के लिए शिष्य की पीड़ा प्रसाद स्वरूप है और शिष्य के लिए गुरु का आशीर्वाद प्रसाद स्वरूप है।

ब्रह्मानन्द परम सुखदम्

सद्गुरु को यही शब्द बोल कर नमस्कार किया जाता है और इस गुरु प्रणाम में गुरुदेव को पूर्ण आनन्द और परम सुख प्रदान करने वाला कहा जाता है, क्योंकि गुरु रूपी भगवान अथवा गुरुदेव में अधिष्ठित शिव अपनी क्रिया शक्ति द्वारा अर्थात् दीक्षा द्वारा शिष्य के चक्षुओं के आगे फैले विकारों का, दोषों का नाश करते हैं जिससे उसका पशुत्व दूर हो कर शिष्यत्व आ सके, और जब यह शिष्यत्व शिष्य में समा जाता है तभी तो वह अपना मार्ग समझ सकता है, उसके दिव्य ज्ञान रूपी चक्षु खुल जाते हैं।

योग वशिष्ठ में कहा गया है—

दर्शनात् स्पर्शनाच्छब्दात् कृपया शिष्यदेहके ।
जनयेद् यः समावेशं शाम्भवं स हि देशिकः ।।

अर्थात् जो कृपा पूर्वक स्पर्श या शब्द के द्वारा शिष्य के देह में शिव भाव का 'आवेश' करा सकते हैं, वे ही देशिक गुरु हैं, आवेश का तात्पर्य कुण्डलिनी जाग्रत हो कर षट चक्रों का भेदन कर ब्रह्मरन्ध्र में परम शिव के साथ मिलन है, सत्य संकल्प सिद्ध गुरु केवल एक बार कृपा पूर्वक दृष्टिपात से ही इस महान कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं।

गुरु का कार्य केवल योग्य शिष्य का उद्धार करना ही नहीं है, गुरु का कार्य तो अयोग्य शिष्य को योग्य बना कर उसका उद्धार करना है, उसे ऐसा प्रबुद्ध तेजस्वी बनाना है, कि वह अपने आप में समर्थ बन सके, इसके लिए आवश्यकता है अपने भीतर वह बोधतत्व उत्पन्न करने की जिससे हम शिव स्वरूप गुरु को समझ कर उनकी कृपा का सुमधुर फल प्राप्त कर सकें, इसके लिए ध्यान रखना है, कि गुरु ही तो वह नीलकंठ महादेव हैं जो हर शिष्य की पीड़ा को अपने भीतर मुस्कराते हुए ग्रहण कर सकते हैं। ●

भक्ति एवं शक्ति दोनों का जहां मिलन है

सालिग्राम साधना

★ जो हर शुभ कार्यों में आवश्यक ही है
★ जिससे हर कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होता है
★ जो अत्यन्त सरल एवं सात्विक साधना है

भक्ति तथा शक्ति जब दोनों का मिलन होता है, तभी सिद्धि पूर्ण रूप से प्राप्त हो पाती है, और स्थायी भाव से साधक के पास स्थित रहती है, केवल शक्ति पूजन से साधक एक ऐसे मार्ग पर दौड़ता है, जिसका कोई अन्त नहीं है, शक्ति को संकलित कर अपने कार्यों में उपयोग करने हेतु भक्ति भी आवश्यक है, भक्ति एक दिव्य भाव है, इस दिव्य भाव में साधक अपने आपको समर्पित कर देता है, यह भक्ति किसके प्रति हो, यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है।

भक्ति का तात्पर्य है, पूर्ण रूप से समर्पित कर उसी विचार में ध्यान लगाना, भक्ति में साधक अपने आराध्य के गुण अवगुण तथा अन्य किसी बात पर विचार नहीं करता, वह तो अपने मन मस्तिष्क में जिस रूप को स्थिर कर लेता है, उसी के अनुसार हर समय पूजा अर्चना, जप, ध्यान, प्रयोग करता रहता है, मन को शान्ति मिलती है, उसे एक आधार मिलता है, कष्टों में एक मार्ग दिखाई देता है लेकिन क्या केवल भक्ति जड़ता नहीं है।

शक्ति तत्व व्यक्ति को चैतन्य करता है, उसे आगे बढ़ने की कुछ ऐसा प्रयास करने की प्रेरणा देता है, उसके प्रयासों में उसे अनुकूलता मिलती है, शक्ति हर समय साधक को जाग्रत करती है और यही जागरण उसकी क्रियाशीलता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है, उसे कोई भी कार्य कष्टप्रद मालूम नहीं होता, शत्रु बाधा हो चाहे आर्थिक संकट हो, वह आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहता है, लेकिन केवल शक्ति हर समय व्यक्ति को एक अव्यक्त क्रिया में जगाये रखती है, संतुष्टि जिसे आत्मसुख भी कहा जाता है, वह नहीं मिल पाती।

जहां भक्ति तथा शक्ति दोनों का संयोग है वही आधार है आत्मसुख का और क्रियाशीलता का, इन दोनों का संयोग सुन्दर जीवन के निर्माण के लिए आवश्यक है, इसीलिए साधनाओं में जहां शिव की साधना होती है वहीं शक्ति की साधना भी आवश्यक है, क्योंकि शिव और शक्ति का मिलन ही पूर्णता की साधना है, जहां यज्ञ पुरुष है वहीं अग्नि भी है, जहां विष्णु हैं वहीं लक्ष्मी भी हैं और यही स्वरूप साधना के लिए भी आवश्यक है।

सालिग्राम–विष्णु स्वरूप

सालिग्राम श्री विष्णु का साक्षात् मूर्तिमान स्वरूप है, और इनका पूजा विधान अत्यन्त सरल है जिस घर में भी पूजा की सामान्य प्रक्रिया भी सम्पन्न होती है, वहां सालिग्राम अवश्य स्थापित किये जाते हैं, मंगल कार्यों में चाहे वह गृह प्रवेश हो, विवाह हो अथवा अन्य कोई शुभ कार्य, सालिग्राम पूजा तो आवश्यक ही मानी गई है।

'शारदा तिलक' ग्रंथ में लिखा है कि–यदि कोई साधक प्रतिदिन सालिग्राम पूजन कर चरणोदक अर्थात् उस पर चढ़या गया जल ग्रहण करता है, तो उसे किसी तीर्थयात्रा की आवश्यकता नहीं है।

यदि किसी रोगी को २१ दिन सालिग्राम पूजन कर जल पिलाया जाय तो उसका रोग पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है।

यदि सालिग्राम का सात दिन पूजन कर नियमित जप किया जाय तो अपमृत्यु एवं अकाल मृत्यु का दोष पूर्ण रूप से दूर हो जाता है।

सालिग्राम पूजन में एक विशेष विधान लक्ष्मी पूजा का भी है, सामान्य रूप से सालिग्राम मूर्ति विग्रह को तुलसी पत्र पर स्थापित करते हैं, यह तुलसी पत्र लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है, इसके बिना सालिग्राम पूजा अधूरी ही है, क्योंकि लक्ष्मी के बिना विष्णु का स्वरूप भी आधा ही माना गया है।

शास्त्रोक्त पूजा में 'सालिग्राम' के साथ ही 'श्रीचक्र' स्थापित किया जाता है और उसकी पूजा सम्पन्न की जाती है, तथा प्रतिदिन यदि पांच मंत्र का जप कर साधक किसी भी कार्य के लिए रवाना हो तो उसे उस कार्य में निश्चित पूर्णता मिलती है।

विशेष नियम

१-सालिग्राम केवल सम संख्या में ही स्थापित किये जाते हैं, लेकिन दो सालिग्राम एक साथ स्थापित नहीं किये जाते, अर्थात् चार, छः, आठ सालिग्राम ही स्थापित करने चाहिए।

२-इसी प्रकार जहां विषम संख्या का प्रश्न है, एक सालिग्राम तो स्थापित किया जा सकता है, लेकिन तीन, पांच, सात, नौ, ····· सालिग्राम स्थापित नहीं किये जा सकते।

३-सालिग्राम पूजा में चन्दन के साथ तुलसी पत्र रखना अत्यन्त ही आवश्यक है, इसके बिना पूजा असफल ही होती है।

४-सालिग्राम नुकीले, बेडौल अर्थात् विकृत मुंह वाला नहीं होना चाहिए।

५-ललाई युक्त भूरे रंग का सालिग्राम पूजा में पूर्ण रूप से वर्जित है।

६-शास्त्रों के अनुसार स्त्रियों के लिए सालिग्राम पूजा वर्जित है, लेकिन किसी ब्राह्मण से कुमारी कन्या तथा गृहस्थ स्त्री सालिग्राम पूजन सम्पन्न करा सकती है।

७-सालिग्राम प्राणश्चेतना मन्त्रों से अभिमन्त्रित हो

साधना का सम्पूर्ण विधान

इस महत्वपूर्ण साधना के लिए लक्ष्मी साधना भी अत्यन्त आवश्यक है, अतः लक्ष्मी स्वरूप श्री चक्र अर्थात् **"श्री यन्त्र"** भी स्थापित कर दोनों का पूजन साथ-साथ करना चाहिए।

'अभिभाष्कर संहिता' के अनुसार-सालिग्राम तथा श्री चक्र के दर्शन मात्र से ही सभी तीर्थों का फल प्राप्त होता है क्योंकि इन दोनों में ही सभी तीर्थ, देवता, पर्वत, समुद्र देवता तथा विष्णु की शक्तियों का वास है।

यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है, और विशेष बात यह है, कि इस साधना का कोई अन्त नहीं है, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् प्रतिदिन दर्शन कर पांच बार भी मन्त्र जप करें तो पूर्ण पूजन का फल प्राप्त होता है।

बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें, अपने सामने एक ताम्रपात्र में पुष्प का आसन स्थापित कर शुद्ध जल सालिग्राम पर अर्पित करें, फिर पोंछ कर इसे दूसरे पात्र में पुष्प पर स्थापित कर दें, स्थापना के समय सालिग्राम का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र से आह्वान करें—

ॐ अस्य श्री द्वादशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापति-ऋषितः गायत्रीश्छन्द, सालिग्रामः परमात्मा देवता, ॐ बीजं, नमः च शक्तिरस्ति। चतुर्विध सिद्धये, सर्व मनोरथ पूर्णाय च अस्य मन्त्रस्य विनियोगः करोम्यहम्॥

इस जल को अपने मस्तक, नेत्र, मुख, कान तथा हृदय पर लगाएं।

अब उसी पात्र में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'छोटा श्रीचक्र'** भी स्थापित करें, श्रीचक्र के पूजन में उस पर कुंकुम, गुलाल अबीर, चावल इत्यादि अर्पित करें और एक घी का दीपक जलाएं, लक्ष्मी बीज मन्त्र द्वारा लक्ष्मी का आह्वान करें, सर्वप्रथम इस साधना में लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

'कमलगट्टा माला' से निम्न लक्ष्मी बीज मन्त्र की एक माला जप कर लक्ष्मी जी की आरती करें—

लक्ष्मी बीजमन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥

अब एक दूसरे बड़े पात्र में जल लें, उसमें थोड़ा चंदन तथा सुगन्धित द्रव डाल दें और उस पात्र को एक हाथ में लेंऔर दूसरे हाथ में घंटा ले कर उसे बजाते हुए सालिग्राम का अभिषेक प्रारम्भ करें।

अभिषेक का तात्पर्य है, को एक धारा में अर्पित करते हुए निम्नलिखित मंत्र जोर से बोलते रहें—

मंत्र

ॐ नारायणाय नमः ॐ केशवाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः॥

इस प्रकार १०८ बार मंत्र जप सहित अभिषेक करने के पश्चात् जल पात्र को रख दें तथा विष्णु और लक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर इस जल में से स्वयं आचमन स्वरूप जल ग्रहण करें।

पूजन का यह जल त्यन्त ही पवित्र होता है तथा इसके पान से शरीर तथा मन की व्याधि शान्त हो जाती है, यदि किसी रोगी को प्रतिदिन पूजन कर जल का पान कराया जाय तो पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

विष्णु तथा लक्ष्मी की यह साधना ऐसी सर्वोच्च साधना है, कि हर साधक को सम्पन्न अवश्य ही करनी चाहिए तथा प्रतिदिन अपने पूजा क्रम में पांच मंत्र का जप कर थोड़ा जल-अभिषेक अवश्य ही करना चाहिए। ●

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं मुक्ति मूलं गुरोः कृपा॥

गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल है, गुरु-पद पूजा का मूल है, गुरु-वाक्य मन्त्र-मूल हैं और गुरु-कृपा मुक्ति का मूल है।

तुम बहने के लिए पैदा हुए हो फिर रुक क्यों गये तुम्हें तो हरहराते हुए आना है

जागना और सोना केवल शरीर की ही क्रियाएं नहीं हैं, मन की भी क्रियाएं हैं, सोने में आनन्द आता है, सोचते हो थकान दूर हो रही है, सोते समय एक स्वप्न लोक में विचरण करने लगते हो, और उस स्वप्न के आनन्द को तो तोड़ना नहीं चाहते, इसीलिए उठ नहीं पाते हो, जब जागना पड़ता है, तो मन कहता है थोड़ी देर और सो जांय।

इस सतत् सोने में तुम्हें जगायेगा कौन? और फिर शारीरिक नींद में सोये व्यक्ति को तो कोई भी जगा सकता है, लेकिन मन की नींद में उलझे तुम्हारे शरीर को, तुम्हारे मन को कौन जगायेगा, क्या मन की ओर भी कभी ध्यान दिया है?

यह मन तो बड़ा विचित्र है, इसको कौन बांध सकता है, शरीर स्थिर है, और मन है कि हजारों किलोमीटर दौड़ जाता है, इसकी गति को क्यों रोक रहे हो, यह मन विचारों में दौड़ता है, और तुम सोये रहते हो, सब सोये हैं तो फिर जगायेगा कौन? यदि तुम अपने आप जाग सकते तो सोते ही क्यों, क्योंकि सोने का तात्पर्य है अन्त, यह अन्त केवल जीवन का अन्त नहीं है, तुम्हारे अस्तित्व का, अस्मिता का अन्त है, मिट्टी की इस देह को धारण किये आओगे और चले जाओगे, हो सकता है कि तुम दो-चार-दस जन्म भी न जागो और समय निकलता ही रहे।

आखिर जागने के लिए क्या करें, इसके लिए जितना अधिक प्रयास करेंगे, नींद उतनी ही ज्यादा आने लगेगी, इसका कारण है, कि तुमने संभावनाओं के द्वार बन्द कर दिये हैं. भीतर से ही इतने भरे हुए होते हो कि दूसरे विचारों के आगमन के लिए जगह ही नहीं है, और जगह होगी भी कैसे, क्योंकि मन को तो तुमने व्यापारी बना लिया है, हर बात को तोल-तोल कर देखता है, हर चीज

जब तुम मेरे पास आते-आते इतने अधिक पास आ जाओगे कि तुम्हारे हृदय का राग मेरे हृदय के राग से मिल जायेगा, तुम्हारे भीतर का संगीत मेरे संगीत में मिल जायेगा, दोनों एक ही साथ कंपित होंगे, धड़कन एक होगी तभी तुम समझ पाओगे, वह आनन्द भाव, वह प्रेम लहर, वह गुंजन, वह गीत जो आनन्द है, आनन्द है।

पर संदेह करता है, और अपने आप पर गर्व करता है कि बिना विचार निर्णय लेना उचित नहीं है ।

यह बात जान लो कि इस सिर को तो भटकना ही है, इस सिर ने ही सारी पीड़ाएं दी हैं, यह सिर ही मन में विचारों को इतना अधिक ठूस देता है, कि किसी और नये विचार के लिए जगह ही नहीं रहती, सबसे पहले इसको खाली करो, यदि तुम्हारे भीतर यह खालीपन नहीं है, तो तुम्हारे लिए किसी भी संभावना का द्वार नहीं खुल सकता, यह द्वार खुलने का मौका बार-बार नहीं आयेगा, हो सकता है कि तुम संभावनाओं के इस द्वार के पास से हो कर निकल जाओ और तुम्हें द्वार का आभास ही न हो ।

क्योंकि तुमने एक ही ओर देखना सीखा है या तुम्हें यही सिखाया गया है, कि जन्म लेना है, जन्म लेने के बाद बड़े होकर शिक्षा ग्रहण करनी है, शादी करनी है, बच्चे पैदा करने हैं, मां-बाप की सेवा करनी है, समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं के साथ जीना है, अपने लिए तो कमाना ही है, अपने बच्चों के लिए भी तुम्हें कमा कर छोड़ जाना है, और फिर बुढ़ापे में मृत्यु की प्रतीक्षा करनी है, यही तो तुम्हें सिखाया गया है और तुमने इसे अपने जीवन का धर्म मान लिया है, इन सब में तुम कहां हो हर स्थिति में तुम्हारे ऊपर दूसरों का अधिकार है, तुम स्वयं तो हर दृष्टि से पराधीन हो, लेकिन यह भी तो विचार करो कि यह जीवन तो तुम्हारा अपना है, पूरे जीवन इस प्रकार की परतन्त्रता ठीक नहीं ।

तुम्हें बहना है

तुम चलने के लिए, बहने के लिए पैदा हुए हो, इस बात को समझो, जिस दिन तुम नदी का स्वरूप बन जाओगे उस दिन तुम्हारे मन को गति मिल जायेगी, नदी की भांति इस जीवन ऊर्जा में गति उत्पन्न करनी है, चेतना की तरंगें और किनारे तोड़ने को तत्पर उद्दाम लहरें लानी हैं, जिस दिन तुमने अपने जीवन की यह आनन्द लहरें रोक दी उस दिन रुके हुए पानी की भांति तुम्हारे जीवन में भी सड़ांध हो जायेगी, इस सड़ांध को अपने से दूर रखने के लिए तुम्हें हरहराते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ना है, आना है, तुम्हारा लक्ष्य सागर है, वही मिलन पूर्ण मिलन है, मैं बांहें पसारे बुलाता हूं, आओ, लहरों की भांति उछलते-कूदते आओ ।

इस बहाव को गति चाहिए, मैं तुम्हें अमृत वर्षा दूंगा जिससे तुम्हारे प्राणों में, हृदय में रंग भर जायेगा, और तुम और तीव्रता से आगे बढ़ सकोगे, तुम न लेना चाहो तो अपने मन के द्वार बन्द कर लो, चूक जाओगे तो हो सकता है दो-चार-दस जन्म बाद फिर कोई तुम्हें जगाने के लिए आये ।
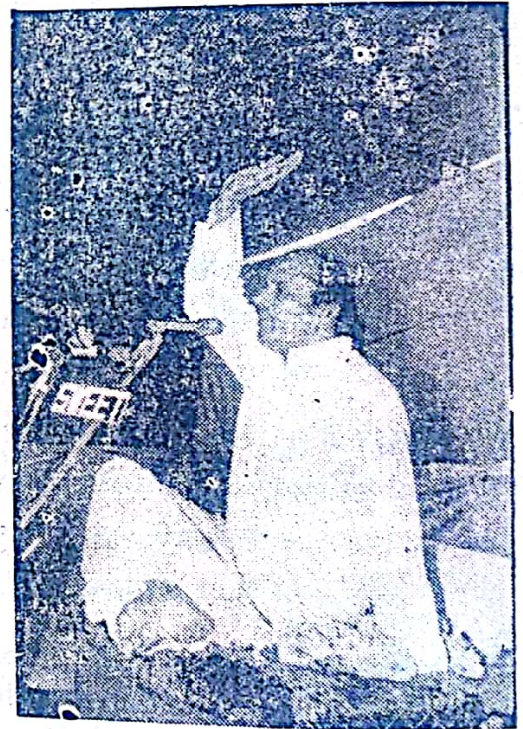
(परम पूज्य श्री सद्गुरुदेव)

तुम तो बहने के लिए पैदा हुए हो, फिर बन्द क्यों हो गये, जीवन में इतनी सुस्ती, इतने नियम, इतनी वर्जनाएं क्यों ? तुम्हारी जीवन उर्जा तो फिर बहनी चाहिए, फिर उठनी चाहिए तरंगें, क्योंकि सरिता तो एक दिन सागर में पहुंच जाती है, सागर नदी तक नहीं पहुंच सकता है, इसीलिए तुम्हें एक सरिता की भांति बहना है ।

शिष्य तो एक छोटे बालक की भांति है, उसे बढ़ने के लिए, चलने के लिए गुरु अपना हाथ आगे करता है, उस हाथ को पकड़ कर वह खड़ा हो जाता है, चलने लगता है, उसे राह मालूम नहीं, उसको तो केवल हाथ पकड़ने का ध्यान है, और जब वह राह पा लेता है, चलना सीख जाता है तो अपने आप हाथ छोड़ देता है, यदि तुम नहीं छोड़ोगे, तो मैं उस समय अपना हाथ खींच लूंगा, क्योंकि मैंने तुम्हें चलना, दौड़ना सिखा दिया है, राह बता दी है, तुम्हारे भीतर गति भर दी है, तुम्हें दौड़ना तो है ही, तुम इस ऊर्जा को, इस शक्ति को, अपने प्राणों के एक-एक अंश में भर लो।

मैं तुम्हें अतृप्त रहने के लिए बुलाता हूं, तुम्हारे जीवन में कोई विराम नहीं होना चाहिए, कहीं रुकना भी नहीं है, और इस जीवन का कोई अन्त भी नहीं है, जहां तुम्हें पूर्ण तृप्ति मिल गई वहीं सब कुछ समाप्त हो गया, इसलिए पाने की लालसा हर समय रखो, तभी तो आगे बढ़ सकोगे, मैं तुम्हें मार्ग बताता जाऊंगा, बढ़ना तुम्हें पड़ेगा, इसके अलावा कोई गति ही नहीं है।

इस जीवन गति की तीव्रता के लिए तुम्हें अमृत चखना है, और मैं तुम्हें आवाज देता हूं कि इस अमृत को चख कर अपने भीतर एक तीव्रता प्राप्त करो, अपने मन को मुर्दा होने से रोको, तुम्हें रोकता कौन है, तुम्हारा अपना भीतर का डर, तुम्हारे अपने भीतर के संस्कार, जिन्होंने मन में केवल संदेह और तर्क के ही बीज बोये हैं, तुम्हें चारों तरफ से इतना जकड़ दिया है कि तुम अपना अस्तित्व ही भूल गये हो।

तुम्हारे जीवन की स्वाभाविक गति तो आनन्द है, उड़ना है, पल-पल प्राणों में नई श्वास भरना है, कुछ ऐसा करना है, कि बहुत ऊंचाई तक उड़ सको लेकिन अपने भीतर उड़ने की चाहत तो उत्पन्न करनी होगी, एक घोंसले को ही तुमने अपना पूरा जीवन दर्शन मान लिया है।

इन पंखों को फड़फड़ाओ और मुक्त आकाश की ओर उड़ने का प्रयास करो, गुरु तुम्हें भरोसा दिलाते हैं, कि तुम उड़ सकते हो, गुरु तुम्हारे पंखों को बांधते नहीं हैं, गुरु तुम्हें एक बंधन से मुक्त करते हैं, तुम्हारी आत्मा पर जो धूल जमी है, उसे हटाते हैं, तुम्हें जीवन का आनन्द सिखाते हैं।

जलाशय के किनारे बैठ कर तुम पानी की कीमत नहीं समझते हो, पानी की कीमत तुम्हें मरुस्थल में मालूम पड़ती है, कि पानी होने और न होने का कितना महत्व है, स्थितिप्रज्ञ होना तुम्हारा जीवन नहीं है, जीवन तो गति है, स्वच्छन्द उड़ना है, गुंजन है, मुस्कराहट है, कुछ देखना है, कुछ ऐसा पाना है, कि प्यास सम्पूर्ण रूप से बुझ जाय।

मन्दिर में बड़ी-बड़ी घंटियां लटकायी जाती हैं, तुम जाते हो और हाथ उठा कर घंटी बजा देते हो, हाथ जोड़ते हो और रवाना होने के समय फिर घंटी बजा देते हो, क्या यह घंटी भगवान को जगाने के लिए थी? ये घंटियां तो तुम्हें जगाने के लिए लगाई गई हैं, कि इस घंटी-घड़ियाल की आवाज से तुम्हारे भीतर कुछ तरंगें उठें, और तुम बाहर को भूल जाओ, इसी तरह गुरु भी शिष्य के मन की घंटियां बजाता है, उसे जगाता है, उसकी ऊर्जा को चैतन्य करता है।

मन की गुफा पर इतने बड़े-बड़े पत्थर मत रखो कि कोई नया प्रकाश भीतर आ ही न सके, भीतर का प्रकाश ही अवरुद्ध हो जाय, भीतर की गंगा को हरहरा कर प्रवाहित होने दो, इस प्रवाह में ही सब कुछ निश्चित है, इस प्रवाह को जितना रोकोगे उतना ही पीछे जाओगे।

तुम्हें आना है—झरने के संगीतमय प्रवाह के साथ, तुम्हें आना है—नदी के आनन्दमय प्रवाह के साथ, आना है, झरनों की गर्जना के समान बहना है, जो तुम भूल गये हो उसे पाना है। ●

जन्म दिन

तेरा

मुबारक मुबारक

धन्य है इक्कीस अप्रैल

२१ अप्रैल पूज्य सद्गुरुदेव का जन्म दिवस है, पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में यह दिवस महोत्सव के रूप में मनाया जाता है, पूज्य गुरुदेव के धाम में पूरे भारतवर्ष से शिष्य आ कर आनन्द महोत्सव मनाते हैं, तीन दिन तक शिष्य आनन्द के अतिरेक में अपने आपको भूल कर एक अद्भुत संसार में खो जाते है।

शब्द इस भाव को प्रकट नहीं कर सकते, लेखन इस आनन्द को लिख नहीं सकता, वाणी इसे बोल नहीं सकती, इस अद्भुत भाव को हृदय के तारों के झंकार से, मधुरता के अमृत रस से, प्रेम के आनन्द प्रवाह से, भक्ति की गहराइयों से, श्रद्धा के स्फुरण से, दिव्यता के तेज से, अनुभव किया जा सकता है।

जो जीवन्त है, जो सत्य है, जो सामने प्रकट है, उससे तो केवल आनन्द का प्याला भर भर कर पीना है, और यह दिवस उसी जीवन्त व्यक्तित्व के देह आगमन का दिवस है, यह दिन वसन्त ऋतु का आगमन है, पतझड़ की समाप्ति हो कर नये पुष्प खिल कर पूरी बगिया को, पूरे वन को सुगन्धित होने का दिवस है, धन्य है यह दिवस जब जीवन के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला, जीवन में आनन्द भरने वाला जीवन की गुत्थियों को सुलझाने वाला महान व्यक्तित्व देह रूप में पृथ्वी पर आया, जिसका चिन्तन व्यक्ति "स्वयं" था, जिसके चिन्तन में भागने की, पलायन की प्रक्रिया नहीं थी, सत्य को ठीक रूप से देख कर पहिचानने की प्रक्रिया थी, जिसके विचारों में जीवन की कमियों के साथ मधुरता का आगमन कैसे हो, मन के मरुस्थल में अमृत वर्षा कैसे हो, जो देह का आनन्द है वही मन का आनन्द हो, सुख देह और मन से गुजरता हुआ आत्मा तक भी पहुंचे, कमियां कम होती जांय, और उन कमियों के स्थान पर एक आह्लाद, एक संगीत, एक गुंजन आ सके, जीवन का क्षण-क्षण मधुर हो, जीवन जीने में आनन्द आये, यही चिन्तन हर समय रहता है।

धन्य है यह दिवस

२१ अप्रैल एक आनन्द दिवस है, प्रेम दिवस है, अहोभाव दिवस है, जो प्रेम और आनन्द के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करता है, देह और आत्मा के संबंध का इतना सकार स्वरूप और कहां ? पूज्य गुरुदेव ! आपने उन सारी भ्रान्तियों को तोड़ा है जो कहते हैं कि साधना, तपस्या देह से अलग है, आपने देह का सम्मान करना हमें सिखाया, आपने सिखाया कि यदि तुम अपने आपसे प्रेम कर सकते हो तो सबसे प्रेम कर सकते हो, यदि भीतर ही आनन्द, अमृत का प्याला नहीं होगा, तो दूसरों को क्या अमृत पान कराओगे।

आत्मा का निवास तो देह के भीतर ही है, और यदि आत्मा को पाना है, तो इस देह को इतना प्रबल, इतना तेजस्वी बनाना पड़ेगा, कि देह के भीतर आत्मा का प्रकाश करोड़ों सूर्यों की भांति जगमगा उठे।

आपका जन्म दिवस परम सत्य को प्रकट करता है, हमारे भीतर उस आनन्द भाव को, अमृत भाव को जाग्रत करता है, जिसे हम भूल गये हैं, हमारे भीतर के उस जहर को निकालने का मार्ग बनाता है, जिससे हमारी देह के अंश-अंश में पीड़ा भर गई है, गुरुदेव ! आपने सिखाया—भीतर शून्यता का भाव उत्पन्न करने का भाव, हमने तो इसमें भांति-भांति के संस्कार विचार धाराएं, विरोधाभास भर रखे थे, हमारा मन कुछ कहता था, और संस्कार

मैं मानता हूं कि तुम बहुत उदास हो, निराश हो, हताश हो, क्योंकि तुमने अपने हृदय के भीतर, मन के भीतर, खाली स्थान रखा ही नहीं है, इसमें शून्य उत्पन्न करो, जो भी क्षण मिलता है, उसका पूरा उपयोग करो, इस शून्य को उत्पन्न कर जीवन का शृंगार, सौन्दर्य भर दो और देखो जीवन को एक नई दृष्टि से, जब पुराना तोड़ोगे तभी नवीनता का निर्माण कर सकोगे।

कुछ और ही कहता था, आपने इस मन की धारा को अपने हाथों से छान कर इसे शुद्ध किया है, गुरुदेव आपने प्रकट की है, हमारे भीतर सरस्वती की वह गुप्त धारा जिसके बिना गंगा यमुना का पवित्र संगम अधूरा था, इस संगम के मधुर पान का तो अभी हमने प्रारम्भ किया है, इस आनन्द पान का बार-बार अवसर हमें देते रहें।

गुरुदेव मैं क्या भेंट करूं

जन्म का यह उत्सव एक जीवन्त अनुभूति है, उस महान व्यक्ति की, जो दिव्य होते हुए भी साकार रूप में सामने उपस्थित है, इसे देख-देख कर जो अनुभूति प्राप्त होती है, वही तो परम तत्व है, सुन-सुन कर नेत्रों से दर्शन का आनन्द पान कर कर, भीतर जो आनन्द सरोवर लहराता है, वही तो सारी पीड़ाओं को दूर करेगा, पूज्य श्री के हर स्वरूप को देखो, इस मन्दिर के कोने-कोने की पूजा अर्चना करो, इसकी परिक्रमा करो, इस मन्दिर में क्या कुछ नहीं है, एक रूप, एक ताल, एक नृत्य, एक स्वर, एक गहराई, एक ऊंचाई सब कुछ एक लय में, यह पूजा, यह आराधना आनन्द का सम्पूर्ण अतिरेक है।

एक शिष्य लिखता है—"आपके लाखों-लाखों शिष्य इस अवसर पर अपनी भावना से उच्च से उच्च भेंट अर्पित करेंगे, मैं सामान्य शिष्य क्या करूं", पूज्य श्री कहते हैं—"तुम मुझे अपना प्रेम भेंट करो, तुम अपने

भीतर की भावनाएं भेंट करो, तुम्हारा यह प्रेम सब कुछ है, अपने भीतर शून्य पैदा करो, जब तक तुम भीतर से खाली नहीं होवोगे, तो कुछ विशेष इसके भीतर कैसे भरोगे।

पूज्य श्री कहते हैं — तुम जो चाहो करो लेकिन पूरे मनोयोग से करो, अधूरेपन से तो तुम्हारे व्यक्तित्व में अधूरापन ही आयेगा फिर मेरे पास आने से क्या तात्पर्य, हृदय की सुनो वह जो कहे उसका कहा मान कर करते रहोगे, तो फिर प्रसन्नता ही मिलेगी, मस्तिष्क तो तर्क करता है, हर चीज को तोड़ता-मरोड़ता है, तो फिर तुम्हें आनन्द कहां मिलेगा, अपने हृदय के कपाट कभी बन्द मत करो।

कैसे मनाएं यह दिवस ?

यह महोत्सव मनाना अपने आपको समर्पित कर देना है, यह समर्पण किस रूप में प्रकट हो, इसका महत्व ही नहीं है, जिस रूप में भी प्रसन्नता अनुभव होती हो, उसी रूप में यह दिवस मनाओ, यदि पूजा से आनन्द मिलता हो तो पूजा करो, यदि गान से आनन्द मिलता है तो अपने स्वर की ओर ध्यान मत दो, गान की ओर ध्यान दो, यदि मन नृत्य करने को कहता है तो नृत्य करो, उछलो-कूदो, गाओ, जिस प्रकार से भी अपने आनन्द को प्रकट करना चाहते हो, उसी रूप से आनन्द सरिता बहने दो।

यदि तुम्हें किसी कार्य से मुस्कान मिलती हो, यदि तुम हंसना सीख सकते हो, यदि तुम अपने आप से पूर्ण प्रेम करना सीखना प्रारम्भ कर सकते हो, तो इसमें देर मत करो, प्रेम के अंकुर तुम्हें मुझ तक लाएंगे, सुगन्धित पुष्प खिल सकेंगे, जीवन का सही अर्थ समझ सकोगे।

अपने इस प्रेम को प्रकट करने में अपने आस पास ध्यान मत दो, दूसरों की ओर मत देखो, अपनी देह को एक ऐसा हिलोरा दो कि मगन हो जाओ, जब यह स्थिति आ जायेगी तो तुम जुड़ जाओगे, उस महासेतु से पहुंच जाओगे पर्वत के उच्च शिखर पर, प्राप्त कर लोगे वह अतल गहराई जहां सब कुछ तुम्हारा ही है, केवल तुम हो, और गुरुदेव हैं, कहीं कोई अन्तर नहीं, दूरी नहीं, केवल प्रेम ही प्रेम है, खिलाओ अपने मन की बगिया में सुगन्धित पुष्पों की बहार, इसके लिए मन को प्रवाहित होने दो, इसके ऊपर किसी तरह की रोक मत लगाओ।

समर्पण ही तो वह कार्य है, जो सब कुछ देता है, समर्पित होने में ही समग्रता है, जब पूज्य गुरुदेव को तुम पूर्ण रूप से समर्पित हो जाओगे तभी तो प्राप्त कर सकोगे सब कुछ, यह दिवस समर्पण दिवस है, जहां अपने भीतर कुछ नहीं रखना है, जैसा भी है, जो भी है, उसे मन की गंगा में बहा कर समर्पित कर दो और फिर देखो क्या मिलता है, पावों पर मस्तिष्क की जंजीरें मत बांधो, कोई और रोकना चाहे तो भी मत रुको, क्योंकि तुम्हें तो अपने आपके लिए जीना है, अपनी दृष्टि से देखना है, अपनी ऊर्जा को उठाना है, इसे चैतन्य करना है, इसे प्रवाहित करना है, सब आनन्दित पक्षियों को सामूहिक रूप से फड़फड़ाना है, सब पुष्पों को एक साथ खिलना है, सुगन्ध बिखेरनी है। ●

गुरु मोरो जीवन प्राण आधार

गुरु के शरीर की निकटता

●

गुरु–शिष्य संबंधों का विवेचन

शास्त्रों में, साहित्यों में और इसके अतिरिक्त भी "गुरु" शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में आता है और स्थान-स्थान पर इस शब्द का अर्थ अलग-अलग है, शास्त्रोक्त रूप से गुरु का तात्पर्य है, "सद्गुरु" जो ऐसे गुणों से युक्त हो, जिसमें "सद्" भाव हो, निश्चय ही यह सद् भाव शिष्य के प्रति हो सकता है क्योंकि शिष्य के बिना गुरु का आधार नहीं है।

'मालिनी विजय' ग्रन्थ के अनुसार—

शिष्यां गुरु पूर्णत्वं स यियासुः शिवेच्छया।
भुक्ति मुक्ति प्रसिध्यर्थं नीयते सद्गुरू प्रति ॥

अर्थात् जो गुरु, शिष्य को भोग तथा मोक्ष दोनों ही तत्वों से साक्षात्कार करा कर पूर्णतः प्रदान कराए वही सद्गुरु है, क्योंकि जीवन का तात्पर्य भोग और मोक्ष दोनों ही है।

अधकचरे शास्त्र, लिखते हैं, कि मनुष्य योनि चौरासी लाख योनियों के बाद मिलती है, इसका मतलब तो यह हुआ कि युगों-युगों बाद मनुष्य जन्म मिलता है और इस जन्म को भी प्रारम्भ से ही सन्यास के मार्ग पर धकेल दें, निग्रह के मार्ग में प्रवृत्त कर दें, जीवन में कुछ कामना, इच्छा रखें ही नहीं, तो फिर चौरासी लाख योनियों के पश्चात् मिले जीवन का अर्थ ही क्या है, शास्त्र इस प्रकार की झूठी बातें सिखा कर भ्रान्ति करते हैं।

जब तक जीवन में भोग नहीं है, कामना पूर्ति नहीं है, तब तक जीवन अधूरा है, इन सब में गुरु का क्या स्थान है, गुरु केवल पूजा आराधना का प्रतीक नहीं है, गुरु तो उसका सखा है, मित्र है, मार्गदर्शक है, उस राह पर चल कर आगे बढ़ा हुआ वह व्यक्तित्व है, जिसे जानकारी है कि मार्ग में क्या कांटे बिछे हैं, और किन स्थितियों में जीवन का विनाश हो सकता है, कौन से कार्य शिष्य को भटका सकते हैं, गुरु इन सब का ध्यान रखते हैं।

गुरु शिष्य से परे ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिससे संबंध न जोड़ा जाय, जिनसे हमारा संबंध कम होता है, उन्हें हम सिर्फ हाथ जोड़ कर अपने रास्ते पर चल देते हैं, मन्दिर में मूर्तियां आपने देखी होगी, व्यक्ति राह चलते मन्दिर की ओर मुंह कर हाथ जोड़ता है, जय बोलता है और आगे बढ़ जाता है, इस सारी प्रक्रिया में संबंध कहां जुड़ा, मूर्ति अपने स्थान पर स्थिर है, और आप अपने रास्ते पर, लेकिन गुरु का कार्य तो बिल्कुल अलग है।

गुरु तो अपने आपसे शिष्य को जोड़ कर उसे परिवर्तित करता है, गुरु का कार्य केवल इतना ही है कि वह शिष्य में आस्था का जागरण कर दें, प्रेम की उत्पत्ति कर दें, और उसके स्वयं के भीतर जो अपने आपको बड़ा समझने का अहंकार है, वह गुरु अपने पास ले लें, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि वह शिष्य को इस बात के लिए संतुष्ट कर दें कि यदि तुम अहंकार छोड़ोगे तो मेरे भीतर पूर्ण रूप से समा पाओगे, क्योंकि मैंने भी अहंकार का त्याग कर एक शून्य स्थान बना दिया है, यदि मेरे मन की वीणा बजे, तो तुम्हारी वीणा के तार भी बजने चाहिए।

एक धनी महिला ने अपने बच्चे को स्कूल में पढ़ने हेतु दाखिला दिलाया और जिस कक्षा में बच्चे को बिठाना था वहां तक ले गयी, बच्चे को अध्यापक ने उसके स्थान पर बिठा दिया, धनी महिला ने अध्यापक से कहा कि आज से यह बालक आपका शिष्य है और आप इसके गुरु हैं, यह बच्चा नाजुक है बड़े ही सुख सुविधाओं से मैंने पाला है, इससे गलती भी हो सकती है और हो सकता है कि किसी बात पर आपका कहना न माने, यदि इससे गलती हो जाय तो आप चांटा इसे न मार कर इसके पास वाले बच्चे को मार देना, यह उसी से समझ जायेगा।

अद्भुत है यह माया, कैसा है यह शिष्य और कैसा है यह गुरु, गुरु, जब तक शिष्य पर हावी नहीं हो जाता, जब शिष्य को सब गुरु रूप में नहीं दिखाई देता, तब तक प्राप्ति संभव नहीं, शिष्य अपने अहंकार को कायम रखते हुए गुरु का केवल गुण गान करता है, तो वह भी पूर्ण शिष्य नहीं बन सकता।

अपना अहंकार समर्पित कर दो

जब तक शिष्य अपनी पूर्ण निष्ठा से अपने आपको समर्पित कर देता है, तो उसका अहं भाव समाप्त हो जाता है, शिष्य के मन में जिस क्षण यह भाव आना प्रारम्भ हो जायेगा कि मेरा मन, मेरा यह शरीर मेरा नहीं है, मैंने अपने जीवन में एक विराट सत्य तथा पूर्ण आनन्द और आत्म साक्षात्कार की प्राप्ति हेतु अपने आपको मन तथा देह दोनों स्वरूपों में समर्पित कर दिया है, तब प्रारम्भ होगा एक नयी पहिचान और नया मौलिक स्वरूप।

कह दादूदास दुनियां बड़ी निठुर

दुनियां का मतलब है, भीड़, और भीड़ का एक ही कार्य है कि जो भी मिले उसे अपना अंग बना लो, कोई भी अकेला नहीं चलना चाहिए, और जिस मनोवृत्ति से सब लोग कार्य करें, चलें उसी तरह से वह भी चले, लेकिन यह तो जीवन नहीं है,

सच्चा शिष्य बनने के लिए सबसे पहले भीड़ से अलग होना होगा, यह भीड़ यह दुनियां गालियां निकालेगी, डरायेगी, धमकायेगी, प्रलोभन देगी, बदनामी करने का प्रयास करेगी, जो भी संभव हो सकेगा वे सब प्रयास तुम्हें अलग करने से रोकेगी।

मछुआरों की बस्ती में मछुआरे लोग केकड़े पकड़ कर एक डिब्बे में डाल देते हैं और निश्चिन्त हो जाते हैं, उस डिब्बे पर ढक्कन नहीं लगाते, क्यों? जैसे ही एक केकड़ा डिब्बे से बाहर निकलने के लिए ऊपर बढ़ता है, तो दूसरे चार केकड़े उसकी टांग पकड़ कर नीचे धकेल देते हैं, सबके सब एक साथ ऊपर बढ़ने का प्रयास ही नहीं करते, चूंकि एक-दूसरे को नीचे खींचने वाले बैठे हैं, इसलिए मछुआरा निश्चिन्त है कि केकड़े डिब्बे से बाहर नहीं निकल सकते।

भीड़ का भी यही कार्य है, जैसे ही कोई–अलग कार्य करेगा, तो उसे पकड़ कर वापिस अपनी जमात में शामिल कर लेगा। बस जिये जाओ केकड़े की भांति।

यदि तुम थोड़ा प्रयास करोगे, तो हो सकता है कोई हाथ बढ़े भी और तुम्हें उस भीड़ से अलग कर दे, शिष्य को तो इतना ध्यान रखना है कि वह अपनी पूर्ण श्रद्धा से गुरु के प्रति अपने आपको समर्पित कर दे, इस समर्पण में अपने अहंकार का विसर्जन सबसे पहले करे, गुरु तो ज्योति है, यदि तुम शून्य रहित हो कर भाव रहित हो कर, गुरु के पास पहुंच गये तो समझ लो एक सरल यात्रा प्रारम्भ हो गई, जो ज्योति तुम्हें प्राप्त हुई है, वही विशाल सूर्य के पास ले जायेगी, तथा उस सूर्य का तेज तुम्हारे भीतर भरेगी।

गुरु कमाने की वस्तु नहीं है, गुरु के पास अपना सब कुछ गवां दोगे, तो तुम कमा पाओगे, तुम्हें यह रहस्य लगता है, लेकिन यह सत्य है कि कमाने की पहली प्रक्रिया ही खर्च है, यह गणित सरल है, लेकिन भीड़ के चिन्तन से इसे मत देखो, इस भीड़ ने ईशा को शूली पर चढ़ा दिया, सुकरात को जहर पिला दिया, दयानंद सरस्वती को जहर दे दिया, किसे छोड़ा, लेकिन इन सभी को बाद में पहिचाना और आज उनके विचारों को पूर्ण सम्मान दिया जाता है, इसलिए जब गुरु, आने को कहते हैं, समर्पित होने को कहते हैं, तो वही सार बात है, इसमें कोई छोटा मार्ग है ही नहीं।

गुरु तो कृष्ण की भांति है, वह अर्जुन से कहता है कि तुम जिसे अपना अहंकार समझ रहे हो, वह तुम्हारा अपना अहंकार है ही नहीं, इसलिए इसे त्यागने और न त्यागने का प्रश्न ही कहां है, यदि तुम क्रियाशील रहोगे तभी इसे पूर्ण रूप से समझ पाओगे।

गुरु और शिष्य का संबंध दूध और जल का संबंध है, शिष्य रूपी जल शुद्ध दूध में मिल गया तो वह भी दूध बन गया, अब कहां दूध और कहां पानी, पानी चला गया दूध में उसने अपने अस्तित्व को पूर्ण रूप से त्यागा, अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया, तो वह भी शुद्ध दूध बन गया।

तो शिष्य भी अपने आपको बहा दे, समर्पित कर दे, तो वह भी धवल हो जायेगा, उसे अपनी गति मिल जायेगी, वह केवल जल नहीं रहेगा।

शिष्य केवल प्रार्थना न करे, केवल पूजा न करे, केवल गुरु पर पुष्पाहार न करे, यदि उसे अर्पित करना ही है तो अपने आपको पूर्ण रूप से अन्तर की धारा जिसमें उसने दबा-दबा कर रखे हैं, उन सबको अर्पित कर दे, अपने देह का, अपने वस्त्रों का, अपने धन का अभिमान अर्पित कर दे तभी वह शिष्य, गुरु को पूर्ण रूप से प्राप्त कर पायेगा, इसीलिए **साख्यानीय उपनिषद** में लिखा है—

गुरुरेव परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः। एकाक्षर प्रदातव्यं प्रदातमम् नाभिनंदति ॥

गुरु ही परम धर्म है गुरु ही परम गति है जो एक अक्षर के दाता गुरु का आदर नहीं करता, उसके श्रुत, तप और ज्ञान धीरे-धीरे वैसे ही क्षीण हो कर नष्ट हो जाते हैं जैसे कच्चे घड़े का जल।

रस बरसत

भींजत अमी

साधना का प्रभाव किस सीमा तक कार्य करता है, क्या साधना, बाधाओं के निराकरण के अतिरिक्त आने वाली बाधाओं की रक्षा में कवच के रूप में भी कार्य कर सकती है? क्या साधना द्वारा निर्बल साधक भी अपने भीतर विशेष क्षमता प्राप्त कर सकता है? जिससे उसके सामने संभावनाओं के विशेष द्वार खुल जांय।

ये प्रश्न हैं उन साधकों के, शिष्यों के जिन्होंने साधना क्षेत्र में पैर रखा ही नहीं है और कुछ करने से पहले ही गुण-दोष, लाभ-हानि, सब कुछ जान लेना चाहते हैं।

क्या जल में उतरे बिना कोई तैरना सीख सकता है, यदि नहीं तो साधना के बारे में प्रश्न उठाने का उन व्यक्तियों को कोई अधिकार ही नहीं है, जिन्होंने अपने मन प्राण एवं श्रद्धा से साधना के क्षेत्र में कोई कार्य ही नहीं किया हो, जो इसे एक प्रयोग के रूप में आजमाना चाहते हैं, ऐसी कोई तुला बनी ही नहीं है, जिसमें साधना को तोला जा सके, साधना तो जाग्रत होने की एक प्रक्रिया है, और यह जागरण धीरे-धीरे ही होगा, क्या कोई पुष्प कली से पुष्प के रूप में एकदम अचानक परिवर्तित हो सकता है? क्या कोई बालक एकाएक युवा बन सकता है? साधना के साथ चमत्कार जोड़ना उचित नहीं।

साधना में क्या है? साधक का शरीर अशुद्ध है, उसका ज्ञान कल्पित है, अधूरा है, इस अज्ञानमयी कारण-शरीर पर गुरु द्वारा प्रदत्त दीक्षा का प्रभाव ही आवश्यक है।

गुरु द्वारा दिया गया बीज मन्त्र, गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान, गुरु द्वारा दिया गया आशीर्वाद ही शिष्य के शुद्ध ज्ञान, शरीर का बीज है।

यह बीज ही शिष्य के शरीर में अंकुरित होकर दोष की निवृत्ति करता है, विशुद्ध भाव जाग्रत कर उसके भीतर के दर्पण को स्वच्छ करता है, और वह देख पाता है, अपने आपको, और जाग्रत कर पाता है, अपनी पांच इन्द्रियों के अलावा छठी इन्द्रिय, जिससे वह अपना निर्दिष्ट, विशिष्ट स्थान प्राप्त कर पाता है।

वह उस रस का आस्वादन कर पाता है, जो उसके देह को ही नहीं पूरे हृदय को रसमग्न कर देते हैं।

यदि साधना हेतु पहला कदम बढ़ेगा तो दूसरा कदम अपने आप उठेगा, और यह यात्रा प्रारम्भ होगी, सिद्धि की यह यात्रा आनन्द महापथ है और जहां आनन्द महापथ पर यात्रा प्रारम्भ हो गई वहां लक्ष्य दूर नहीं है, शिष्यत्व, दिव्यत्व, आत्मत्व ही तो लक्ष्य है, देह का परम उत्कर्ष है, जीवन का सच्चा अर्थ है। ★

★ क्या बाधाओं का पूर्व ज्ञान हो सकता है ?
★ क्या आने वाली बाधाओं को शान्त किया जा सकता है ?

हां ! यह संभव है

वरूथिनी सिद्धि प्रयोग से

यह कहा जाता है कि जीवन है, तो उसके साथ सुख-दुःख चलते ही रहते हैं, कभी सुख आयेगा तो कभी दुःख, यह दृष्टिकोण एक अत्यन्त ही निराशावादी दृष्टिकोण है, थोड़ी देर के लिए यह मान लें कि जीवन में अनचाहे दुःख पीड़ाएं और कुछ आकस्मिक घटनाएं भी घट सकती हैं, तो क्या ऐसा कोई उपाय नहीं, जिससे जीवन की दुःखदायी घटनाओं की जानकारी हो सके और उनके बारे में कुछ उपाय किया जा सके।

जीवन में यह सत्य है, कि परिवार में एकदम बीमारी आ जाय, परिवार के सदस्य का एक्सीडेन्ट हो जाय, जिस व्यक्ति पर भरोसा करें वह व्यक्ति आपको घाटा पहुँचा दे, कोई अचानक आपको धोखा दे दे, कोई शत्रु आपके विरुद्ध विशेष षड्यन्त्र बना दे, कहीं अकस्मात् रूप से कोई ऐसा कार्य हो जाय, जिससे आपकी प्रतिष्ठा पर हानि पहुंचे।

ये सब स्थितियां जीवन में सुख का नाश कर दुःख में वृद्धि करती हैं, और जीवन की उन्नति को पीछे धकेलती है, इन स्थितियों के कारण आप जो श्रम करते हैं, वह श्रम आपको पूर्ण रूप से फलदायी नहीं रहता।

साधना ही इसका उत्तर है

कुछ साधनाएं वृद्धि की साधनाएं होती हैं, जिनको सही तरीके से गुरु आशीर्वाद से सम्पन्न करने से जीवन में उन्नति प्राप्त होती है।

कुछ साधनाएं जिनमें कुछ विशेष तन्त्र प्रयोग भी शामिल है, शत्रु नाश, बाधा निवारण, मारण प्रयोग, स्तम्भन एवं वशीकरण प्रयोग की साधनाएं होती हैं, जिसमें साधक अपने कार्यों हेतु बाधाओं के नाश के लिए कार्य करता है।

कुछ विशेष साधनाएं रक्षा साधनाएं होती हैं, जो कि भविष्य में आने वाली बाधाओं के संबंध में एक कवच का रूप बन जाती हैं, जिससे यदि बाधाएं आएं भी, तो आप पर प्रभाव न डाल सकें,

इन बाधाओं की आपको पूर्व जानकारी हो जाय, जिससे समय रहते, उचित उपाय किया जा सके।

वरूथिनी साधना सिद्धि

यह महत्वपूर्ण वरूथिनी देवी साधना विशेष प्रयोग दिवस के दिन सम्पन्न की जाती है, और इसका विधान अत्यन्त सरल है, और विशेष बात यह है कि यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए है क्योंकि गृहस्थ को ही अपने जीवन में पग-पग पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है, अपने घर परिवार कार्य के अतिरिक्त समाज में रहते हुए उसे सब कार्य निभाने पड़ते हैं, वह चारों ओर से जिम्मेदारियों के तारों से बंधा एक कुशल नट की भांति जीवन जीता है, जहां थोड़ा पैर चूका कि परेशानियां, दस गुना बढ़ जाती हैं।

'योगिनी हृदय तंत्र' के अनुसार—ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के साथ जिन विशेष शक्तियों की उत्पत्ति की, उनमें प्रमुख **'वरूथिनी'** है।

'अष्टादस निकाय' में इस साधना का जो वर्णन मिलता है, वह निश्चय ही इस साधना के पूर्ण स्वरूप को स्पष्ट करता है।

शाक्तगम साहित्य में **'श्री विद्यार्णं'** ग्रंथ में भी इस साधना के सिद्धान्त तथा उपासना के संबंध में विवरण है, यह ग्रंथ प्रकाशित ही नहीं हुआ, इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति जम्मू रघुनाथ मन्दिर पुस्तकालय में है, यह ग्रंथ शंकराचार्य द्वारा लिखा गया है।

इसमें लिखा है कि यदि कोई साधक वरूथिनी सिद्धि प्राप्त कर लेता है, तो वह सम्पूर्ण ज्ञाता बन जाता है, उसे भविष्य की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

साधक में सूर्यत्व प्रबल हो जाता है, उसका मस्तिष्क अत्यन्त तीव्र तथा विशेष विचारशील हो जाता है।

अपने कार्यों के गुण अवगुण का ज्ञान हो जाता है, और उसके सामने अपना मार्ग स्पष्ट रहता है, कोई भी विपरीत स्थिति आने पर सिद्धि प्राप्त साधक को पूर्ण जानकारी हो जाती है और वह उसकी निवृत्ति का मार्ग ढूंढ़ लेता है।

शक्ति संचार के तीव्रत्व में एक तादात्म्य हो जाता है, जिससे उसकी शक्ति एक सही दिशा में अग्रसर रहती है, व्यर्थ के कार्यों में उसकी शक्ति का नाश नहीं होता।

गुण युक्त द्रव्य युक्त पुण्य दोनों की ही प्राप्ति संभव हो जाती है।

साधना प्रयोग

वरूथिनी साधना एक तांत्रिक प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक को कुछ विशेष सावधानियां भी रखनी पड़ती हैं।

साधक एकादशी के दिन भोजन ग्रहण न करें, साधना के दिन शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो।

साधना के दिन साधक के मन में विशेष उत्साह हो, यह उत्साह शक्ति युक्त ध्यान कर साधक अवश्य ही प्राप्त कर सकता है।

साधना के समय किसी भी प्रकार का विघ्न न हो, इसलिए जिस कमरे में साधना करें, उस कमरे के दरवाजे अच्छी तरह से बन्द कर दें।

पूजा के दौरान यदि कोई दरवाजा खटखटाये या बाहर कोई आवाज हो तो भी दरवाजा न खोलें।

साधना सामग्री

इसकी साधना प्रक्रिया थोड़ा जटिल है, लेकिन क्रम-बद्ध रूप से करने में साधक सरलता पूर्वक प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, जिसमें मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'बाधा निवारण यन्त्र'** **'दो जोड़ी दो मुखी रुद्राक्ष'** तथा **'२१ हकीक पत्थर'** आवश्यक है।

इस साधना में किसी प्रकार की माला की आवश्यकता नहीं है।

साधना विधान

सर्वप्रथम गुरु पूजन कर २१ बार गुरु मन्त्र का जप करें, इसी प्रकार भैरव पूजन कर सुपारी रूप में अथवा शुद्ध भैरव लिंग प्राप्त हो या तो भैरव गुटिका का पूजन कर अपने सामने एक ओर स्थापित कर दें।

भैरव पूजा में २१ बार निम्न मंत्र का पाठ करें।

मन्त्र

।। ॐ भं भैरवाय नमः ।।

अब अपने सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प रख कर **बाधा निवारण यंत्र** जो कि ताम्रपत्र पर अंकित हो, शुद्ध जल से धो कर उस पर स्थापित करें और सिन्दूर चढ़ाएं, इसके साथ ही पूजा स्थान में धूप अवश्य जला दें, ध्यान कर अपनी बाधाओं के नाश की प्रार्थना कर वज्र मुद्रा अर्थात् दोनों घुटने टिका कर पैर पीछे करके बैठें तथा बाधा निवारण हेतु निम्न मन्त्र का २१ बार जप करें—

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।।

पहले से ही सिन्दूर से रंग कर रखे हुए चावलों को प्रत्येक बार मंत्र जप के समय, पात्र में रखे यन्त्र पर फेंकते रहें।

इसके पश्चात् दोनों दो मुखी रुद्राक्षों को अपने सामने यंत्र पात्र के बाहर सफेद चावल की ढेरी पर रखें और उस पर चंदन चढ़ाएं, शिव का ध्यान करें, अपने पैरों को सीधा कर पालथी मार कर बैठ जांय, दाएं हाथ में जल ले कर बारी-बारी से रुद्राक्षों पर चढ़ाते रहें तथा प्रत्येक रुद्राक्ष पर इक्यावन बार यह प्रयोग सम्पन्न सम्पन्न करें।

मन्त्र

।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।

यह पूजन कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् अपने सामने तीन लाइनों में २१ हकीक पत्थर रखें तथा प्रत्येक हकीक पत्थर पर तिल तथा सरसों चढ़ा दें, साथ ही एक मिट्टी के दिये में तेल भर कर दीपक जला दें, अब मंत्र जप प्रारम्भ करें तथा अपने हाथ में थोड़े तिल और सरसों ले लें, इस समय अपनी मुद्रा दूसरी ओर कर दें, मंत्र जप के समय दिये की ओर देखना नहीं है, अर्थात् दीपक आपके पीठ पीछे हो।

मन्त्र

।। सर्वा बाधा प्रशमनम् त्रैलोकस्याखिलेश्वरी
एवमेव त्वया कार्यं मस्मद वैरी विनाशनम् ।।

मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपनी सारी बाधाओं को एक कागज पर लिख कर उस पर लाल डोरा बांध कर अपने पास दीपक के साथ रख दें जब १०१ बार मंत्र जप पूर्ण हो जाय तो यह कागज उस दीपक की लौ में भस्म कर दें तथा जोर से फूंक मार कर दीपक को बुझा दें, अब अपने सामने से हकीक पत्थर, तिल, सरसों तथा कागज की राख आदि को एक लाल कपड़े में बांध दें और इसे अलग कोने में रख दें।

जब यह सारी साधना सम्पन्न हो जाय तो केवल गुरु के सम्मुख अर्पित किया हुआ प्रसाद ही ग्रहण करें अन्य प्रसाद जो कि भैरव गुटिका के सामने अर्पित है, श्वान अर्थात् किसी कुत्ते को खिला दें।

लाल कपड़े में बांधे गये हकीक पत्थर, तिल, सरसों तथा राख सहित दूर एक गड्डा खोद कर गाड़ दें घर आ कर पुनः स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र पहिन कर गुरु आरती तथा शिव आरती सम्पन्न करें।

यह साधना अत्यन्त प्रभावकारी एवं महत्वपूर्ण साधना है, रक्षा कवच की यह महत्वपूर्ण साधना साधक को बाधाओं की अति होने पर, जीवन में हर समय चिन्ता रहने पर, हर समय आशंका रहने पर अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। ●

तीन अलौकिक कैसेट

जो इस युग की आश्चर्यजनक उपलब्धि है

- ### मोहिनी विद्या

किसी को भी सम्मोहित कर देने की कला अत्यन्त गोपनीय रही है, और फिर अपने रूप और व्यक्तित्व के जादू को निखारना, सामने वाले को वश में कर देने की विद्या विश्व की अद्वितीय साधना और प्रयोग है, इस पूरे के पूरे ज्ञान को संजोया है इस कैसेट में, पूज्य गुरुदेव ने, अपने शब्दों में।

- ### क्या आपके शरीर में आपकी ही आत्मा है

हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती और यदि आपके शरीर में आपकी आत्मा नहीं है तो फिर किसकी है ? क्या इसे अनुकूल बनाया जा सकता है।

एक सनसनीखेज कैसेट, एक गूढ़ रहस्य, एक आश्चर्यजनक उपलब्धि, गुरुदेव के मुंह से निःसृत एक संग्रहणीय कैसेट।

- ### सिमट जाती हैं स्थान और समय की दूरियां

पातंजली ने एक विशेष विधि स्पष्ट की थी, जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति एक क्षण में ही हजारों मील दूर स्थित अपने प्रिय को सुनने, मिलने और देखने में समर्थ हो पाता है।

सिमट जाती हैं दूरियां, मिट जाता है समय का अन्तराल........... और जीवन हो उठता है रंगीन, रसमय, प्राणमय।

एक सशक्त कैसेट, एक गोपनीय, सरल साधना विधि आपके लिए।

प्रत्येक कैसेट का मूल्य - २४)रु०

(धनराशि अग्रिम भेजने की आवश्यकता नहीं है)

नोट : आप हमें लौटती डाक से ही लिख भेजें कि आपको कौन सी कैसेट चाहिए, हम वी०पी० से सुरक्षित रूप में कैसेट आपके हाथों में पहुंचा देंगे।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

'सौभाग्य कल्प लतिका' से

जीवन की सौभाग्य साधना के

चार विशिष्ट प्रयोग

तंत्र साहित्य में "सौभाग्य कल्प लतिका" एक अत्यन्त आधारभूत एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है, स्वामी क्षेमानन्द द्वारा रचित इस ग्रंथ में जीवन की दिन प्रतिदिन की समस्याओं से संबंधित कुछ विशेष साधनाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

स्वामी क्षेमानन्द स्वयं भी बहुत ज्ञानी, तांत्रिक, मांत्रिक थे, उनकी इस महारचना में दिये गये साधना प्रयोग अत्यन्त सरल, अनुभवजन्य तथा गृहस्थ जनों के लिए ही हैं।

इस प्रामाणिक पाण्डुलिपि से "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के पाठकों के लिए कुछ विशिष्ट प्रयोग प्रस्तुत हैं—

१- कायाकल्प प्रयोग

कायाकल्प का तात्पर्य है, कि काया में अर्थात् शरीर में सुन्दरता की ओर, स्वस्थता की ओर परिवर्तन, स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मन एवं मस्तिष्क का जनक है, अस्वस्थ व्यक्ति किसी भी कार्य की ओर अपने आपको केन्द्रित नहीं कर सकता, उसके जीवन निर्माण की प्रक्रिया ही रुक जाती है, इसीलिए देह विज्ञान को महाविज्ञान कहा गया है।

यह साधना प्रयोग किसी भी रविवार को सूर्योदय के समय सम्पन्न किया जाना चाहिए, यदि पीड़ित व्यक्ति अर्थात् रोगी स्वयं सम्पन्न करे तो विशेष उचित रहता है।

इस प्रयोग में तिब्बती लामा मन्त्रों से अभिमन्त्रित **'११ ताम्र कायाकल्प यन्त्र'** आवश्यक हैं, इन ११ यंत्रों को एक तांबे के लोटे में शुद्ध जल भर कर उसमें डुबो दें, और यह जल पात्र अपने सामने रख दें।

साधक स्नान कर मंत्र प्रारम्भ करें, विशेष बात यह है कि अपने सामने **'त्रिपुर सुन्दरी का चित्र'** स्थापित करें, मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले तेल का दीपक अवश्य जला दें, पीले आसन पर खड़े हो कर **'कायाकल्प माला'** से पांच माला निम्न मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करें, इस

साधना में मंत्र जोर-जोर से बोल कर करना चाहिए, साधक का मुंह पूर्व की ओर हो ।

मन्त्र

॥ ॐ हुं हुं हुं हैं हैं हैं ह्रौं ह्रौं ह्रौं हुं हुं हुं फट् ॥

पांच माला मंत्र जप के पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को अपने नेत्रों के, मस्तक के, तथा सीने के लगाएं और जल को उसी स्थान पर बैठ कर ग्रहण कर लें ।

पूरा जल ग्रहण करने के पश्चात् ११ ताम्र कायाकल्प यन्त्रों को उस पात्र में से निकाल कर साफ पानी से धो दें और लाल कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रख दें, दूसरे दिन यह प्रयोग पुनः सम्पन्न करें, इस प्रकार ११ दिनों तक प्रयोग सम्पन्न करने से रोग पूर्ण रूप से दूर हो जाता है ।

नियमित रूप से यह प्रयोग सम्पन्न करने से चेहरे का रंग निखर जाता है, शरीर में हर समय ताजगी, स्फूर्ति अनुभव होती है, रोग शान्त होता है, शरीर अत्यन्त क्रियाशील हो जाता है ।

२-द्रव्य प्राप्ति प्रयोग—आर्थिक उन्नति साधना

द्रव्य का तात्पर्य है, धन, लाभ, वृद्धि और धन की देवी है लक्ष्मी, लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों में गजलक्ष्मी स्वरूप विशेष प्रभावदायक, फलदायक माना गया है, **'सौभाग्य कल्प लतिका'** ग्रंथ के अनुसार यदि कार्यों में निरन्तर हानि हो रही हो, किसी को उधार दिया हुआ धन वापिस नहीं आ रहा हो, आर्थिक हानि त्रस्त कर रही हो, तो साधक को लक्ष्मी की पूर्ण कृपा के लिए गजलक्ष्मी प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यह साधना ११ दिनों की साधना है और विशेष बात यह है, कि यह साधना प्रयोग किसी पूर्णिमा को अथवा पंचमी तिथि को ही प्रारम्भ करना चाहिए, तथा ग्यारह दिन प्रयोग निरन्तर क्रम में सम्पन्न करना चाहिए ।

यह तो निश्चित है कि किसी भी साधना में पूर्ण सफलता हेतु गुरु-कृपा, आशीर्वाद आवश्यक है, अतः साधना प्रयोग के पहले गुरु पूजन कर एक माला गुरु मन्त्र का जप अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, तथा साधना प्रयोग के अन्त में भी एक माला गुरुमन्त्र जप सम्पन्न करें ।

इस साधना में दो सामग्री, मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'गजलक्ष्मी यंत्र'** तथा लक्ष्मी बीज मन्त्रों से सम्पुटित **'कमलगट्टे की माला'** आवश्यक है ।

साधना के समय साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठे, अपने सामने एक बाजोट पर चावलों की बड़ी ढेरी पर गुलाल, पुष्प इत्यादि रख कर उस पर गजलक्ष्मी यंत्र स्थापित करे तथा गजलक्ष्मी चित्र सामने लगाये, पूरे साधना काल में घी का दीपक अवश्य ही जलता रहे ।

गुरु मन्त्र का जप कर सामने स्थापित गजलक्ष्मी यन्त्र पर दीपक से पूजन कर पास में दीपक रखे तथा मन्त्र जप प्रारम्भ करे ।

लक्ष्मी मंत्रों से सम्पुटित कमलगट्टे की माला से निम्न मन्त्र की ११ माला का जप सम्पन्न करे—

मन्त्र

॥ ॐ गजलक्ष्म्यै ह्रीं ह्रीं गजलक्ष्म्यै ह्रीं ह्रीं गजलक्ष्म्यै हुं फट् ॥

इस बीज मंत्र के जप के पश्चात् एक माला गुरु मन्त्र का जप करें और लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें लक्ष्मी के सामने चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण करें ।

इस प्रकार यह प्रयोग ११ दिन तक सम्पन्न करें, ग्यारहवें दिन सात कन्याओं को भोजन कराएं, साधना प्रयोग पूर्ण होते-होते साधक को अपने कार्य में आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होने लगता है, रुका हुआ धन प्राप्त होने

की स्थिति बनती है, लक्ष्मी प्राप्ति के नये अवसर बनने लगते हैं।

यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित किये रहें, तथा नित्य अगरबत्ती अवश्य करें।

३- शत्रु हन्ता प्रयोग

शत्रु बाधा पूर्ण रूप से दूर करने का सफल प्रयोग सौभाग्य कल्प लतिका में लिखा है, कि शत्रु का तात्पर्य है वह प्रत्येक व्यक्ति जो आपको बाधा पहुंचाने का प्रयास करें, वह प्रत्येक स्थिति जिसके कारण उन्नति रुकती हो, और इस स्थिति को मिटाने के लिए शत्रु हन्ता प्रयोग के समकक्ष कोई भी प्रयोग नहीं है।

सामान्य रूप से अपने दैनिक क्रिया कलाप के साथ किया जाने वाला नौ दिन का प्रयोग व्यक्ति अकेले या पति पत्नी दोनों मिल कर भी कर सकते हैं, विशेष बात यह है कि पूरे नौ दिन तक अखण्ड तेल का दीपक अवश्य जलते रहना चाहिए, इसलिए पहले से बड़ा मिट्टी का दीपक ही जलाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त साधना में **'३ शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल'** तथा शत्रु स्तम्भन मंत्रों से अभिमन्त्रित **'मूंगा माला'** आवश्यक है।

किसी भी शनिवार की रात्रि को यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है, साधक काली धोती पहने तथा काले आसन पर बैठ कर प्रयोग प्रारम्भ करे, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए।

सर्वप्रथम अपने सामने बाजोट पर एक श्वेत वस्त्र बिछा कर सिन्दूर से एक त्रिकोण बनाएं, इस त्रिकोण के तीनों कोनों पर शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल स्थापित करें, त्रिकोण के मध्य में "क्रीं" बीज मन्त्र लिखें।

अब धूप अगरबत्ती जला कर गुरु का ध्यान कर वीर आसन में बैठ कर मंत्र जप प्रारम्भ करें, उस रात्रि को पांच माला मंत्र जप अनिवार्य है।

मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपने दाएं हाथ में जल ले कर जिस शत्रु बाधा को पूर्ण रूप से दूर करना है, उस बाधा नाश की पूर्ति हेतु, "यह अनुष्ठान सभी देवताओं को साक्षी मान कर सम्पन्न कर रहा हूं, मुझे इसमें पूर्ण सफलता मिले", ऐसा संकल्प कर जल छोड़ दें।

मन्त्र

॥ ॐ शत्रूणां ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं नाशय नाशय रक्त प्रवहय रक्त प्रवहय मम सिद्धि देहि देहि नमः ॥

जब नौ दिन पूर्ण हो जांय, तो उस रात्रि को तीनों तांत्रोक्त फल अपने घर से बाहर तीन अलग-अलग दिशाओं में गाड़ दें और उस पर बड़ा पत्थर रख दें।

इस प्रभावशाली प्रयोग के एक महीने के भीतर-भीतर कुछ ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, जिसकी साधक कल्पना ही नहीं कर सकता, जब भी कभी शत्रु बाधाएं प्रबल हो जांय तो शनिवार को यह प्रयोग दोहराया जा सकता है, इस साधना प्रयोग में काम आने वाली शत्रु स्तम्भन माला का किसी अन्य साधना में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

४- भाग्योदय प्रयोग

जब तक भाग्योदय जाग्रत नहीं हो जाता, तब तक व्यक्ति जितने प्रयत्न करता है, उसका एक अंश भी लाभ प्राप्त नहीं हो पाता, थोड़ी सी भी सफलता बार-बार प्रयत्न करने पर ही प्राप्त होती है, और जब भाग्योदय प्रारम्भ हो जाता है, तो रुके हुए कार्य भी पूरे होते हैं, एक सफलता के बाद दूसरी सफलता प्राप्त होती है।

'सौभाग्य कल्प लतिका' के अनुसार इस हेतु विशेष अनुष्ठान पंचमी को अथवा किसी सोमवार से प्रारम्भ कर पांच सोमवार सम्पन्न करना चाहिए, अर्थात् प्रत्येक सोमवार को दोहराना चाहिए।

इस साधना में '५ मधुरूपेण रुद्राक्ष', '५ भाग्य-लक्ष्मी यन्त्र' तथा 'गुरु चित्र', 'लक्ष्मी चित्र' और 'भाग्य लक्ष्मी चित्र' आवश्यक है।

सोमवार के दिन सुबह स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अपने सामने तीनों चित्र लगाएं, अब साधक अपने सामने पांच चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक भाग्य लक्ष्मी सिद्धि यन्त्र तथा एक मधु-रूपेण रुद्राक्ष स्थापित करें, प्रत्येक ढेरी के आगे एक घी का दीपक जलाएं इन पांचों दीपकों की ज्योति का मुंह साधक की ओर होना चाहिए।

कुंकुम, पुष्प, इत्र, मौली से तीनों चित्रों का पूजन करें, गुरु का ध्यान करें तथा प्रत्येक यन्त्र पर एक-एक पुष्प चढ़ाएं।

अब 'रुद्राक्ष माला' से एक माला "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जप कर, भाग्योदय मन्त्र को सात माला जप करें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ।।

जब सात मालाएं पूर्ण हो जाय तो एक लोटे में दूध और जल मिलाकर उसमें एक मधुरूपेण रुद्राक्ष तथा एक भाग्य लक्ष्मी सिद्धि यन्त्र डाल दें और इसे किसी भी शिव मन्दिर में जाकर शिवलिंग पर चढ़ा दें।

इसी प्रकार अगले सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करें तथा पांच सोमवार को प्रयोग सम्पन्न कर अनुष्ठान की पूर्ण आहुति करें।

इस सिद्ध प्रयोग के बारे में यदि कहा जाय कि यह साधना प्रयोग सोये हुए भाग्य को जाग्रत करने का प्रयोग है, तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ऊपर दी गई चारों साधना प्रयोग स्वामी क्षेमानंद ने अपने कई शिष्यों को, साधकों को सम्पन्न करा कर ही ग्रन्थ की रचना की थी, वस्तुतः सिद्ध योगियों का यह ज्ञान भारतीय संस्कृति का गौरव ही कहा जा सकता है। ●

अक्षय

हेम गर्भ युक्त
स्वर्ण पात्र साधना

संसार की दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधनाओं में स्वर्ण पात्र साधना है, 'विश्वामित्र संहिता' में इस साधना को कई नामों से पुकारा गया है, जैसे— **हेम गर्भ साधना, अक्षय पात्र साधना, कनक वर्षा साधना, स्वर्णावती साधना, कंचनमाला अप्सरा साधना, पूर्ण पात्र साधना, मनोवांछा कामना पूर्ति साधना** आदि आदि।

"कुबेर तन्त्र" में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जो व्यक्ति गृहस्थ हैं, जिनके ऊपर समाज की जिम्मेवारियां हैं, जो अपने परिवार का सही प्रकार से पालन पोषण करना चाहते हैं, जो जीवन में उन्नति चाहते हैं, जो यश और सम्मान के आकांक्षी हैं, जो जीवन में भोग और विलास की पूर्णता चाहते हैं, उनके लिए तो यह स्वर्ण पात्र साधना एक वरदान है, जीवन का एक सौभाग्य है, शास्त्रों की तरफ से दिया हुआ अप्रतिम उपहार है, ऋषियों मुनियों और पूर्वजों का हमारे प्रति दिया गया आशीर्वाद है।

वस्तुतः लगभग सभी तांत्रिक और मंत्र से संबंधित ग्रन्थों में इस **'स्वर्ण पात्र साधना'** के बारे में विवरण दिया हुआ है। **'वशिष्ठ संहिता'** में बताया गया है कि यह जीवन की आश्चर्यजनक साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर निश्चय ही अनायास धन प्राप्ति होने लगती है।

'विश्वामित्र संहिता' में दावे के साथ यह कहा गया है, कि ऐसा हो ही नहीं सकता कि व्यक्ति स्वर्ण पात्र साधना करे और उसके घर में अभाव या दरिद्रता रहे, ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह अक्षय पात्र साधना करे और जीवन में उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त न हो।

'कामदेव तंत्र' में बताया गया है कि इस स्वर्ण पात्र साधना से न केवल धन और ऐश्वर्य की ही प्राप्ति होती है बल्कि इस साधना से पूर्ण पौरुषता, बल, साहस और पराक्रम की प्रतीति होने लगती है, और वह समर्थ यौवनवान व्यक्तित्व बन जाता है, कामदेव के समान वह सुन्दर स्त्रियों को आकर्षित करने में सफल हो पाता है।

'गुरु गोरखनाथ' ने अपने ग्रन्थ में इस साधना की अत्यन्त प्रशंसा की है और बताया है कि वास्तव में ही उसे दुर्भाग्यशाली ही कहा जाना चाहिए जो यह साधना सम्पन्न नहीं करता, यह तो वैसी ही बात हुई कि दरवाजे पर गंगा नदी प्रवाहित हो रही हो और वह मूढ़ प्यासा का प्यासा रह जाय।

यहां तक कि शंकराचार्य ने 'शंकर समुच्चय' ग्रन्थ में इस साधना का विवरण वर्णन स्पष्ट करते हुए बताया है कि यह साधना भोग और मोक्ष दोनों देने में समर्थ है, इस दृष्टि से जहां यह गृहस्थ व्यक्तियों के लिए श्रेष्ठतम साधना है वहीं सन्यासियों के लिए यह एक आवश्यक

साधना कही गई है क्योंकि इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि और सफलता मिलती है और उसके माध्यम से लक्ष्मी पूर्णता के साथ स्थापित होती है।

ऊपर मैंने चार-छः महत्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम लिखे हैं परन्तु इसके अलावा यदि प्राचीन साहित्य को टटोला जाय तो सैंकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे, जिसमें इस साधना को श्रेष्ठतम बताया है, इस साधना को अद्वितीय बताया है और इसे जीवन का सौभाग्य माना है।

ने यह साधना सम्पन्न कर ली, उसे जीवन में अन्य कोई साधना सम्पन्न करने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि इस एक साधना से ही जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता और ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है।

वास्तव में ही यह एक आश्चर्यजनक और अद्वितीय साधना है, जिसका प्रभाव व्यर्थ नहीं जाता, यदि हम सामान्य तरीके से ही इस साधना को सम्पन्न करें तब भी

"यों तो पूरे जीवन में अन्य साधनाओं के लिए कई अवसर उपस्थित होते हैं परन्तु अक्षय पात्र साधना या स्वर्ण पात्र साधना के लिए तो पूरे वर्ष में केवल डेढ़ घंटा ही प्राप्त होता है, और जो इस अद्वितीय अवसर को चूक जाता है, उसके समान दुर्भाग्यशाली या हतभागी मनुष्य नहीं हो सकता।"

यह जीवन का सौभाग्य है, साधना की सुगन्ध है, ऐश्वर्य तक पहुंचने की अद्वितीय छलांग है, ऋण मुक्ति का अद्वितीय अवसर है, और साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने का सौभाग्यदायक क्षण है, जो कि इस वर्ष १४ अप्रैल १९९१ को दोपहर १२ बजे से १ बजकर ४७ मिनट के बीच स्वर्ण पात्र साधना के माध्यम से सम्पन्न हो रहा है।

जब **भगवान श्रीराम** राज सिंहासन पर बैठने को हुए तो वशिष्ठ ने स्वयं राजतिलक से पहले राम को अक्षय-पात्र साधना से संबंधित क्रिया सम्पन्न करने की सलाह दी थी, जिससे कि उनका राजकोष धन धान्य से परिपूर्ण और अक्षय बना रहे, **इन्द्र ने स्वयं** इस साधना को भगवान शिव से सीख कर पूर्णता के साथ सम्पन्न की थी, स्वयं **कृष्ण** ने अपने गुरु सांदीपन से यह साधना पूर्णता के साथ सीखी थी, जिससे कि वह द्वारिका जैसे नगर का निर्माण कर सका और महाराजाओं से भी श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर सका, **स्वयं वेदव्यास** ने इस साधना को विस्तार से स्पष्ट किया है, **स्वामी मछिन्दरनाथ** ने इस साधना को सम्पन्न करने के बाद कहा था कि जिस व्यक्ति

इसका पूर्ण फल अवश्य ही प्राप्त होता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि यह साधना अत्यन्त सरल और आसान है, इस साधना में न तो किसी प्रकार की जटिलता है और न विशेष विधि-विधान।

कभी-कभी कुछ मंत्र और कुछ साधनाएं ऊपर से अत्यन्त सामान्य दिखाई देते हैं परन्तु उनका प्रभाव अपने आपमें अचूक और अद्वितीय होता है, जिस प्रकार बन्दूक की एक छोटी सी गोली बहुत बड़ा काम कर डालती है, जिस प्रकार एक छोटा सा दीपक घने अन्धकार को चीर कर रोशनी पैदा कर लेता है, जिस प्रकार एक छोटा सा अंकुश मद मस्त हाथी को अपने नियन्त्रण में कर लेता है, उसी प्रकार से स्वर्ण पात्र साधना अत्यन्त सरल और सामान्य

प्रतीत होते हुए भी पूर्ण प्रभावयुक्त, अप्रतिम, आश्चर्य-जनक सफलता देने में समर्थ है ।

मुहूर्त

यह साधना वर्ष में केवल एक दिन विशेष मुहूर्त में सम्पन्न की जा सकती है, जिसे शून्य संक्रान्ति अथवा पूर्ण संक्रान्ति कहा गया है, शास्त्रों के अनुसार जब सूर्य, राशियों में प्रथम मेष राशि पर संचरण करता है, उसी दिन इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है ।

इस बार यह पूर्ण संक्रान्ति १४ अप्रैल १९९१ को आ रही है, पूर्ण संक्रन्ति जो सभी दृष्टियों से सम्पन्न हो, पूर्ण संक्रान्ति जो कभी खाली न हो, पूर्ण संक्रान्ति जो सभी दृष्टियों से परिपूर्ण हो ।

इस बात का ध्यान रहे कि समय का विशेष महत्व होता है, और विशेष काल में, विशेष प्रयोग सम्पन्न करने पर विशेष सिद्धि प्राप्त होती है, और शास्त्रों के अनुसार यह विशेष समय १४ अप्रैल १९९१ को दोपहर १२ बजे से १ बज कर ४७ मिनट के बीच सम्पन्न होता है और इसी अवधि में अपने घर में यह स्वर्ण पात्र स्थापित करना चाहिए ।

स्वर्ण पात्र

यह विशेष प्रकार से निर्मित शंख का एक प्रकार है, जिसे स्वर्ण पात्र कहा गया है, इसका आकार, इसकी बनावट अपने आपमें अत्यन्त सुन्दर और अद्वितीय होती है, जो संसार में पाये जाने वाले अन्य शंखों से बिलकुल अलग होती है, इस शंख को बहुत पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए ।

पूर्ण निर्माण मंत्र सिद्धि और दुर्लभ पूर्ण स्वर्ण पात्र को सिद्ध करने पर व्यय १२३) रु० आता है, इसके लिए अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप तुरन्त इससे संबंधित सूचना दे दें, हम समय रहते ही इस स्वर्ण पात्र को सुरक्षित रूप से वी०पी० के द्वारा आपके पास भिजवाने की व्यवस्था करेंगे ।

"स्वर्ण पात्र साधना तो जीवन का सौभाग्य है, यह एक अद्वितीय और दुर्लभ प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर अपूर्व सिद्धि, सफलता और ऐश्वर्य प्राप्त होने लगता है ।"

—"विश्वामित्र सहिता" से

"जिसके भाग्य में काली छाया या दुर्भाग्य अंकित है, वही ऐसे अवसर को हाथ से गंवाता है क्योंकि ऐसा क्षण तो वर्ष में केवल एक बार आता है और इस क्षण को पहिचान कर इस प्रकार के पात्र को अपने स्थान पर स्थापित करना ही चाहिए ।"

—"वशिष्ठ प्रयोग" से

"वास्तव में ही एक हजार कुबेर साधनाएं और दस हजार लक्ष्मी साधनाओं को एकत्र किया जाय, तो उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण और मूल्यवान स्वर्ण पात्र साधना है, जिसे समय आने पर साधक को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए ।" —"तन्त्र चिन्तामणि" ग्रंथ से

"जो जीवन में भोग और ऐश्वर्य के आकांक्षी हैं, जो जीवन में पूर्णता चाहते हैं, जो विश्व में अपना नाम प्रसिद्ध करना चाहते हैं, जो दान देना और सम्मान से जीना चाहते हैं उन्हें समय आने पर इस स्वर्ण पात्र साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए ।"

—गुरु गोरखनाथ

"जो सही अर्थों में पौरुषवान और शक्तिवान, सौन्दर्ययुक्त और व्यक्तित्व सम्पन्न बनने के आकांक्षी हैं, उन्हें इस साधना को अवश्य

यह इस लिए किया गया है कि जिससे आपको समय रहते स्वर्ण पात्र प्राप्त हो सके और आप इस अद्वितीय अवसर से वंचित न रहें।

साधक अपने घर में स्वर्ण पात्र स्थापित कर सकता है, अथवा जहां रसोई का भण्डार गृह है वहां पर भी अक्षय पात्र को रख सकता है, जिसका व्यापार हो, उसे चाहिए कि वह अपने घर के अलावा अपनी फैक्ट्री या दुकान पर भी स्वर्ण पात्र को प्राप्त कर इस विशेष मुहूर्त में स्थापित करें।

यों यदि एक स्थान पर कई साधक हों, तो वे किसी विशेष स्थान पर इस विशेष स्वर्ण पात्र को स्थापित कर साधना सम्पन्न कर इसे अपने घर ले जाकर रख सकते हैं, पर शास्त्रों में स्पष्ट रूप से वर्णन है कि अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान या दुकान पर इसे स्थापित करें और अपने घर पर तो स्थापित करें ही, यह स्थापन प्रयोग आप, आपका पुत्र या आपके परिवार का कोई भी सदस्य कर सकता है।

जैसा कि मैंने बताया कि इस साधना में दिन और समय का विशेष महत्व है, अतः १४ अप्रैल १९९१ को दोपहर के १२ बजे से १.४७ बजे के बीच अपने घर के किसी स्थान पर इस स्वर्ण पात्र को स्थापित कर दें, और पहले से ही चावल के सौ दाने चुन कर अलग कटोरी मे रख दें, इस बात का ध्यान रहे कि चावलों का कोई भी दाना खण्डित न हो, इस विशेष समय में ये पूरे सौ दाने अक्षय पात्र में रख दें और सामने दीपक, अगरबत्ती लगा लें, तथा संभव हो तो **'स्फटिक माला'** से निम्न मन्त्र का सौ बार उच्चारण कर लें—

मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ॥

इस प्रकार करने पर यह स्वर्ण पात्र साधना सफल और सिद्ध हो जाती है, फिर इस स्वर्ण पात्र को पूजा स्थान में ही रहने दें या दुकान में स्थापित रखें, यदि चूहों का डर हो तो इसे लाल कपड़े में बांध कर भी रखा जा सकता है, या किसी डिब्बी में बन्द करके इस स्वर्ण पात्र को स्थापित किया जा सकता है

ही सम्पन्न करनी चाहिए क्योंकि स्वर्णपात्र साधना वृद्धता को भी पूर्ण यौवन में बदल देने से सही अर्थों में काया कल्प साधना ही है।

—"मकरन्द संहिता" से

"जो जीवन में दरिद्रता को हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त करना चाहते हैं, जो अपने जीवन में सम्पूर्ण भोग प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही स्वर्ण पात्र साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए।"

—स्वामी मच्छिन्दरनाथ

"जो मोक्ष के आकांक्षी हैं, जो पूर्ण भक्ति मुक्ति चाहते हैं, जो भोग मोक्ष दोनों में परिपूर्णता चाहते हैं, जो साधना में सिद्धि और सफलता चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही अपने जीवन में स्वर्ण पात्र साधना सम्पन्न कर ही लेनी चाहिए।"

— शकराचार्य

"वास्तव में ही स्वर्ण पात्र साधना जीवन का सौभाग्य है, अद्वितीय अवसर है, दुखी मानव जाति को ऋषियों का उपहार है।"

— "सिद्धाश्रम वाणी" से

वस्तुतः कलियुग में और वर्तमान युग में यह एक दिव्य और चमत्कारिक प्रयोग है, कभी-कभी छोटी सी घटना भी पूरे जीवन को बदल डालती है, हो सकता है, आपके सौभाग्य का क्षण आ गया हो और इस साधना से आप उस सौभाग्य को प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो सकें। ●

कुछ अनुभवजन्य प्रामाणिक प्रयोग

पिछले दो तीन अंकों से हम इस दुर्लभ और महत्वपूर्ण "नीली पुस्तक" से कुछ टोटके पाठकों के लिए प्रकाशित करते रहे हैं, और पाठकों के पत्रों से यह स्पष्ट हो रहा है, कि उन्हें आश्चर्यजनक सफलताएं और लाभ होने लगा है।

ये टोटके या प्रयोग भले ही सामान्य और साधारण दिखाई दें, पर इनका प्रभाव अचूक और आश्चर्यजनक होता है. इस बार जो प्रयोग दिये जा रहे हैं, वे अनुभव की कसौटी पर खरे उतरे हैं, और निश्चय ही पाठक एवं साधक इससे लाभ उठायेंगे।

१- उग्र देवता सिद्धि प्रयोग

हनुमान, काली, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, भैरव, आदि साधनाएं उग्र स्वरूपा कहलाती हैं, जो साधक इन साधनाओं को एक बार में ही सिद्ध करना चाहें, तो उनको चाहिए, कि वे पहले अमावस्या की रात्रि को एक हांडी में सात लोहे की कीलें, सात कोयले के टुकड़े **'सात दोमुखी रुद्राक्ष'** डालकर उसे लाल कपड़े में बांधकर घर के बाहर या जंगल में दक्षिण दिशा की ओर रख दें और मुड़ कर वापिस न देखें, इसके बाद यदि साधक किसी दिन इन उग्र रूपों की साधना सम्पन्न करता है, तो उसे अवश्य ही सफलता मिलती है।

२- अप्सरा सिद्धि साधना प्रयोग

पत्रिका में समय-समय पर अप्सरा साधना के बारे में विवरण वर्णन प्रकाशित हुआ है, और कई साधकों ने पुष्पदेहा, मृगाक्षी आदि अप्सराओं की सिद्धि प्राप्त की है।

पर यदि किसी साधक को कुछ कारणों से इस प्रकार की साधनाओं में सिद्धि प्राप्त नहीं हो रही हो, तो उन्हें यह टोटका आजमाना चाहिए।

शुक्रवार को सुबह **'पांच मकरन्द'** लेकर लाल कपड़े में बांध कर उसकी पोटली बांध लें और घर के बाहर अथवा जंगल में जाकर उत्तर दिशा की ओर फेंक दें, फेंकते समय यह कहें कि आज मैं रात्रि को अप्सरा सिद्धि प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, और मुझे अप्सरा का साहचर्य एवं सान्निध्य प्राप्त होना ही चाहिए।

फिर रात्रि को यदि साधक अप्सरा साधना सिद्ध करने बैठता है, तो उसकी सफलता की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है, कई साधकों ने इस प्रयोग को आजमाया है, और उन्हें श्रेष्ठ सफलता मिली है।

३- द्यूत क्रीड़ा में सिद्धि प्राप्त करने का प्रयोग

यद्यपि द्यूत या जुआ अच्छी बात नहीं है, फिर भी क्लबों में या पंच सितारा होटलों में कई प्रकार से जुआ खेलने की प्रवृत्ति है, इसी प्रकार यदि देखा जाय तो लॉटरी भी एक प्रकार से जुआ ही है, ताश खेलना, अंक लगाना, घुड़दौड़ आदि जुए की श्रेणी में आते हैं।

इसके लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग है, यदि खिलाड़ी घर से रवाना होने से पहले अपने हाथ में 'पांच धूर्जटा' ले कर जाय और जहां खेले या जहां पर बैठे उसके आस-पास बिखेर दे, तो उसकी जीत होती है, कई लोगों ने इसे आजमाया है, और उन्हें सफलताएं भी मिली हैं।

४- वशीकरण प्रयोग

यद्यपि इससे पहले सम्मोहन से संबंधित प्रयोग दिये थे, और साधकों ने इसका लाभ उठाया है, और इससे आश्चर्यजनक लाभ अनुभव हुआ है।

जिस पर सम्मोहन या वशीकरण करना हो, रविवार के दिन एक लाल कपड़े पर उसका नाम पीले रंग से लिख दें, और फिर उस पर **'पांच वश्यतारा'** रख दें, और फिर उस नाम पर एक टक नजर रखते हुए मन में सोचे कि यह मेरे वश में होना ही चाहिए और जैसा मैं कहूं वैसा ही जीवन भर करता रहे।

इसके बाद वे पांच वश्यतारा उठा लें और कपड़े को समेट कर एक तरफ रख दें, फिर जिसे वश में करना हो, या जिस पर सम्मोहन अथवा वशीकरण करना हो, उसके पास जाने पर वश्यतारा धीरे से इधर-उधर फेंक दें तो वह निश्चय ही वश में हो जाता है और उसे जो भी कहा जाता है, मान लेता है, इसका प्रभाव काफी लम्बे समय तक रहता है।

५- रोग-मुक्ति प्रयोग

यों तो रोग मुक्ति के कई छोटे-छोटे प्रयोग दिये हैं, परन्तु यह प्रयोग अपने आपमें आश्चर्यजनक, अनुकूल है।

रविवार के दिन पानी का एक गिलास भर दें और उसमें **'हेम गर्भ गुटिका'** डाल दें, फिर उस पानी पर हनुमान का नाम ले कर सात बार फूंक मारें और वह हेम गर्भ गुटिका बाहर निकाल दें, तथा वह पानी सात बार रोगी के सिर पर घुमा कर घर के बाहर फेंक दें, तो उसी क्षण से रोगी ठीक होने लगता है और ऐसा करने पर जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ कर लेता है।

पर इस बात का ध्यान रहे कि हेमगर्भ गुटिका कई रोगियों पर आजमाई जा सकती है, और इसका आश्चर्य-जनक लाभ प्राप्त होता है।

६- घबराहट मिटाने का प्रयोग

कुछ लोग छोटी-छोटी बातों पर घबरा जाते हैं या किसी के सामने जाने पर सही प्रकार से बात नहीं कर पाते, अथवा किसी लड़की को देख कर हाथ पांव फूल जाते हैं, अथवा उन्हें अकारण चिन्ताएं और भय बना रहता है, जिससे सही प्रकार से नींद नहीं आती या हर समय मन में बेचैनी, चिन्ता और खटका बना रहता है।

इसके लिए रविवार के दिन साधक अपने घर में नौ दीपक लगा दें और इन दियों के सामने एक बर्तन में या कटोरी में **'हिरण्य-गर्भ'** रख दें, इसके बाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि मेरे मन का भय और घबराहट हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाय।

इसके बाद हिरण्यगर्भ कहीं भी जाते समय अपनी जेब में रखें, तो निश्चय ही उसकी घबराहट समाप्त हो जाती और उसमें पौरुषता, आत्मविश्वास और दृढ़ता विशेष रूप से अनुभव होने लगती है।

७-ब्लड प्रेसर (रक्त चाप) मिटाने का प्रयोग

यदि किसी को बराबर रक्त चाप या ब्लड प्रेसर रहता है, तो उसे चाहिए कि वह हर समय **'रक्तिम रुद्राक्ष की माला'** अपने गले में धारण किये रहे, तो उसका रक्त चाप धीरे-धीरे सामान्य स्थिति में आ जाता है और भविष्य में रक्तचाप बढ़ता नहीं, साथ ही उसे अपने जीवन में आर्थिक अनुकूलता प्रतीत होती है।

८- शीघ्र विवाह प्रयोग

इस पुस्तक में हमें यह विशेष टोटका प्राप्त हुआ है, और आजमाने पर इसके परिणाम अत्यन्त अनुकूल अनुभव हुए हैं।

शुक्रवार के दिन शादी की इच्छा रखने वाला पुरुष या लड़की स्नान कर भगवान शिव का पूजन कर उन्हें १०८ बिल्व पत्र या पुष्प चढ़ाएं, और फिर यह मन में कामना करें कि मेरा शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाय, और उसमें किसी प्रकार की बाधा या परेशानी न आये।

साथ ही भगवान शिव पर **'२१ रुद्रल'** चढ़ा दें, तो उसी क्षण से वातावरण अनुकूल होने लगता है, और वह जिससे भी विवाह की आकांक्षा रखता है, या रखती है, तो मनोवांछित स्थान पर उसका विवाह सम्पन्न हो जाता है।

९-परीक्षा में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

किस भी प्रकार की परीक्षा हो अथवा आई०ए०एस० या कोई इन्टरव्यू हो, तो इस प्रयोग को अवश्य ही आजमाना चाहिए।

परीक्षा देने के लिए जाते समय थोड़े से काले तिल चबा लें और अपनी जेब में **'साफल्य गुटिका'** रख कर जावें तो उसे अवश्य ही उस दिन परीक्षा या इन्टरव्यू में सफलता मिलती ही है।

वास्तव में ही साधकों को या पाठकों को ये प्रयोग आजमाने चाहिए, कभी-कभी जो काम हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं होते, वे एक छोटे से प्रयोग से हो जाते हैं।

नोट-सात दोमुखी रुद्राक्ष-५१/-, पांच मकरन्द-६०/-, पांच धूर्जटा-६०)रु०, पांच वश्यतारा-६०)रु०, हेमगर्भ गुटिका-३०)रु०, हिरण्य गर्भ ५१)रु०, रुद्राक्ष माला-३००)रु०, इक्कीस रुद्रल-६०)रु०, साफल्य गुटिका-३५)रु०।

काठमाण्डू साधना शिविर

जो साधक ११, १२, १३, फरवरी ९१ को नेपाल आये हैं उन्होंने अनुभव किया होगा कि यह शिविर कितना शानदार और महत्वपूर्ण रहा है, इसकी वीडियो कैसेट तैयार कर दी गयी है जो उत्तम टेक्निक से सम्पन्न करने की वजह से अत्यन्त प्रभावयुक्त बन गई है।

आप स्वयं देखेंगे कि इसमें आप हैं, इस कैसेट के माध्यम से आप अपने परिवार, अपने आस-पड़ोस और अपने मित्रों को बता सकेंगे कि आप किस प्रकार के अद्वितीय समारोह में भाग ले सके और आने वाली कई पीढ़ियों के लिए यह कैसेट आपके लिए धरोहर होगी।

रियायती मूल्य—१९५)रु०

(अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप लिख कर हमें सूचना दें, आपको यह कैसेट सुरक्षित रूप से भेजने की व्यवस्था कर दी जायेगी)।

महत्वपूर्ण पुस्तिका

पूज्य गुरुदेव ने कुछ लघु पुस्तकों का निर्माण करवाया है, जो अपने आपमें अद्वितीय हैं, इनमें पूज्य गुरुदेव की वाणी संग्रहित है, प्रत्येक पुस्तिका का मूल्य-१.५०)रु० है।

पर १५ पुस्तिकाओं के सेट को रियायती मूल्य पर मात्र १५)रु० में ही आप लोगों के हाथों में भेजने का निश्चय किया है, १५ पुस्तिकाओं का सेट ही भेजने की व्यवस्था है, अलग से भेजना संभव नहीं।

आप हमें लिख भेजें, हम आपको वी०पी० से इन दुर्लभ और महत्वपूर्ण पुस्तिकाओं का सेट भेजने की व्यवस्था कर लेंगे, इसके लिए भी अग्रिम धनराशि भेजने की आवश्यकता नहीं है।

फार्म नं०-४, नियम-८ देखिए

१-प्रकाशन स्थान—जोधपुर। २-अवधि—मासिक। ३, ४, ५-मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक नाम—योगेन्द्र निर्मोही। क्या भारत का नागरिक है?—हां। पता—द्वारा मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर। ६-उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हैं, तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों—डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली तथा कैलाशचन्द्र श्रीमाली द्वारा **मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)।**

मैं योगेन्द्र निर्मोही एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिया गया विवरण सत्य है।

—प्रकाशक - योगेन्द्र निर्मोही

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है, अतः प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है उनसे सम्बन्धित चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री, साधकों की सुविधा के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने हेतु कार्यालय ने व्यवस्था की है।

आप केवल पत्र द्वारा सूचित कर दें कि आपको कौन-कौन सी सामग्री चाहिए, हम डाक व्यय लगा कर, वह सामग्री वी०पी० द्वारा भेजने की व्यवस्था कर देंगे, जिससे सामग्री आपको उचित समय पर सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सकेगी।

साधना नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
सालिग्राम साधना	१२	सालिग्राम लिंग	१२०)रु०
		श्री यन्त्र	६०)रु०
		छोटा श्री चक्र	२१)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
वरूथिनी सिद्धि प्रयोग	२५	बाधा निवारण यन्त्र	१२०)रु०
		दो जोड़ी दोमुखी रुद्राक्ष	६०)रु०
		२१ हकीक पत्थर	१०५)रु०
चार विशिष्ट प्रयोग—	२६	—	—
१- कायाकल्प प्रयोग	२६	११ ताम्र कायाकल्प यन्त्र	५५)रु०
		त्रिपुर सुन्दरी चित्र	२०)रु०
		कायाकल्प माला	१५०)रु०
२- द्रव्य प्राप्ति प्रयोग	३०	गजलक्ष्मी यन्त्र	२४०)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
३- शत्रु हन्ता प्रयोग	३१	३ शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल	६३)रु०
		मूंगा माला	८०)रु०
४- भाग्योदय प्रयोग	३१	५ मधुरूपेण रुद्राक्ष	१५०)रु०
		५ भाग्य लक्ष्मी यन्त्र	१०५)रु०
		गुरु चित्र	२०)रु०
		लक्ष्मी चित्र	१०)रु०
		भाग्य लक्ष्मी चित्र	१०)रु०
		रुद्राक्ष माला	३००)रु०
स्वर्ण पात्र साधना	३३	स्वर्ण पात्र	१२३)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०

यह यज्ञ कार्य जर्जरित समाज को फिर से प्राणवान बनाने की तैयारी है, वेद, उपनिषद, श्रुति की महान संस्कृति ही आधारभूत संस्कृति है तथा इसे और अधिक प्रज्ज्वलित करना है, फिर से ज्योति को तीव्र प्रकाशमान कर समाज के अन्धकार को मिटाना है।

महालक्ष्मी यज्ञ और ध्यान योग शिविर, हमारे लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही चिन्तनों का अनूठा अवसर है।

ब्रह्म ज्ञानी, तपस्वी, तेजस्वी, परमहंस पूज्य गुरुदेव की साक्षात् उपस्थिति, विराट सागर का सान्निध्य, शास्त्रीय पद्धति से बनाये गये यज्ञ कुण्ड में आहुति–साधना की त्रिवेणी का यह अद्भुत संगम दुर्लभ है।

इस महान शिविर में भाग लेकर देखें– "सिद्धाश्रम साधक परिवार" साधनात्मक आयामों के नये आकाश को छूने के लिए क्या कर रहा है।

हम सब एक विशाल परिवार के सदस्य हैं, और उद्देश्य है–संगठन, समर्पण, सिद्धाश्रम।

हम संगठित हैं-इन महान आयोजनों से, शिविरों से, हम समर्पित हैं परम पूज्य गुरुदेव को, और हमारा लक्ष्य है-सिद्धाश्रम।

हम, आप सभी को प्रेम से आमन्त्रित करते हैं, इस आयोजन में भाग लेने को, और प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिन्हें इस दिव्य शान्त माहौल में परम तत्व प्राप्त करना है।

व्यस्त और त्रस्त जीवन में ऐसे अवसर तो कभी-कभी ही मिल पाते हैं।

नोट- इस आयोजन के लिए सहयोग राशि ३५१)रु० है, सभी से निवेदन है कि दिनांक ११ अप्रैल की शाम तक साधना स्थल पर अवश्य पहुंचें, अपने साथ हलका बिस्तर इत्यादि सामान अवश्य ले आएं, अन्य सभी व्यवस्था एवं सेवा का अवसर हमें दें।

'नारगोल' पहुंचने के लिए, अहमदाबाद-बम्बई मुख्य रेलवे लाइन पर 'वापी' के निकट 'संजान रेलवे स्टेशन' पर उतरना होगा, वहां से शिविर-स्थल तक जाने के लिए "सिद्धाश्रम साधक परिवार" गुजरात द्वारा वाहनों की व्यवस्था की गई है।

इस सम्बन्ध में पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें—

१- **प्रवीण जोशी**
सी/३, कस्तूरी नगर
मांजलपुर नाका बड़ौदा (गुज.)

२- **उपेन्द्र आर भट्ट**
सी/२१ सुधन लक्ष्मी सोसायटी
सुभानपुरा बड़ौदा ३९०००७

३- **जयेश भाई देसाई**
गुरु-कृपा अपार्टमेंट, बेचर रोड,
बलसाड़, गुजरात

४- **रमेश भाई बी० जोशी**
गांधी रोड, मु० पो० नारगोल,
वा० स्टेशन संजान, जिला बलसाड़

रजि० नं० : ३५१०५/८१   पोस्टल एल० आर० जे० : ३६६७/८६-८७

गुरु-तीर्थ के प्रांगण में

निखिलेश्वर जन्म समारोह

"सौभाग्य महोत्सव"

ध्यान के मानसरोवर में डुबकी लगाने की प्रक्रिया है

(१९, २०, २१ अप्रैल १९९१)

- यह सौभाग्य है हमारी पीढ़ी का, जो हमें गुरुदेव की जीवन्त उपस्थिति का आनन्द मिल रहा है।
- सौभाग्य महोत्सव—ध्यान का, चेतना का, अद्भुत आनन्द शिविर है।
- देह से जुड़े हैं प्राण, इस देह के प्राण तत्व को चैतन्य करने की अनोखी, काया-कल्प दीक्षा, इस सौभाग्य महोत्सव में—
- सौभाग्य महोत्सव शिविर है—सब कुछ प्राप्त करने का, अपने आपमें पूर्णता प्राप्त करने का।
- यह ध्यान योग शिविर है—शक्ति प्राप्त करने का, जो साकार करेगा आपको, और अलग करेगा उस भीड़ से, जहां पहिचान नहीं है आपके व्यक्तित्व की।

गुरुदेव जन्म महोत्सव पर गुरु-तीर्थ का उद्घोष
कुछ आश्चर्य आपकी प्रतीक्षा में

सौभाग्य महोत्सव ध्यान योग शिविर सहयोग राशि—६६०)रु०

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)